

रसप्रबोध ॥

जिसमें

स्वकीया, परकीया, मध्या, मुग्धा, उत्का, प्रौढ़ा, वाग्विदग्धा, क्रियाविदग्धा खण्डिता, कलहन्तरितादि नायकाओंका भेद यथातत्थ्य दोहाओं में बर्णित है ॥

जिसको

सय्यद गुलामनवीकविने नायकाभेद विज्ञपुरुषोंके अवलोकनार्थ अतीवपरिश्रमसे निर्मित किया

बाजपेयिपण्डिद्रामरत्न के प्रबन्धसे
प्रथमबार

—— * ——

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई,) केछापेखाने में छपा
जनवरीसन् १८९० ई०॥

इस मतबे में जितने प्रकार के रागोंकी पुस्तकें छपी हैं उनमें से कुछ नीचे लिखी हैं ॥

रागप्रकाश

गढ़अमेठी के राजामाधवसिंहसाहबबहादुर रचित बहुत अच्छे कल्याण खेमटा ठुमरी अद्धा आदि ईश्वर विषयक समय के हैं और इसमें सर्व रागों के प्रमाण भी हैं ॥

रागसंग्रह

कृष्णचन्द्रकबि रचित बहुत अच्छे२ राग हैं ॥

मनमोहन

बलदेवप्रसाद मुदर्रिस रचित जिसमें समय के अनुसार उत्तमोत्तम राग हैं ॥

युगलविलास

रामसिंहजी रचित जिसमें श्रीकृष्णजी और राधाजी के विचित्र रागों में नानाप्रकार के विलास वर्णनकियेगये हैं ॥

लावनीबनारसी

अर्थात् मरहटी ख्याल काशीगिरि बनारसी परमहंस रचित जिसमें देवता और देवियोंकीस्तुति विशेषकर ब्रह्मकी उपासना ब्रह्मज्ञान उपदेश और हरिभक्तों के ज्ञानकी दृढ़ता के निमित्त श्रीकृष्णचन्द्रजीकी बालक्रीड़ाका वर्णन है ॥

शृङ्गारबत्तीसी

महाराजामानसिंहजी रचित ॥

भजनमाला

बाबूराजकुमार देवनन्दनसिंह रचित इसमें उत्तम भजनहैं ॥

श्रीकृष्णगीतावली

मुंशीमहाबीरप्रसादसाहब स्याहानवीस तहसील महाराजगंज रचित इसमें चुनेहुये और उमदा२ भजन हैं ॥



अथ रसप्रबोधप्रारम्भः ॥

दोहा ॥

दोहामैंयहग्रन्थको कीन्ह्योंतिहिरसलीन ॥ अपने
मनकीउक्तिसों रचिरचियुक्तिनवीन १ नवहूरसकोजब
भयो यामेंबोधबनाय ॥ रसप्रबोधयाग्रन्थको नामध
र्‌यौतबल्याय २ सत्रहसैअट्ठानबे मधुसुदिछठिबुध
बार ॥ बिलगरामसेंआइकै भयोग्रन्थअवतार ३ बांचि
आदितेअन्तलौं यहसमुझैजोकोइ ॥ ताहिऔररसग्रं
थकी फेरिचाहनहिंहोइ ४ कबिजनसोंरसलीनयह बि
नतीकरतपुकारि ॥ भूलिनिहारिबिचारिकै दीजोताहि
सवाँरि ५ ॥ अथ रसवर्णन । दोहा ॥ बरणमङ्गलाचरण
अरु कबिकुलकोअबआनि ॥ रसकोवर्णनकरतहौं ग्र
न्थमूलजियजानि ६ ॥ अथ रसलक्षण ॥ श्रवणसुनतर
सशब्दको मन्धनदेख्योजाय ॥ रसलक्षणतिनकेमते
समुझिपर्योयहआय ७ जबबिभावअनुभावअरु व्य
भिचारीमिलिआनि ॥ परिपूरणव्यापीजहां उपजैसोर
सजानि ८ ॥ अथ रसरूप ॥ जोथायीरसबीजबिधि मा

नसचितक्षितिमाहिं ॥ ताकोअंकुरजोकछू सोथायीक
हिवाहिं ९ अवसरसमउपजावने सरसावतजलरूप॥
अलिबनउद्दीपनाहियो जनविभावअनुरूप १० अन
भावहुतरुप्रकटकरि जानिलेहुयहबात ॥ व्यभिचारीहै
फूलसों क्षणक्षणफूलतजात ११ तिनसँयोगमकरन्द
लौं रसउपजतहैआनि॥ रसिकमधुपकबिचित्रकरि ता
हिकरैपहिंचानि १२ ॥ अथ प्रथमभावकहबेकोहेतुकथनं ॥
भावहितेरसहोतहै समुभिलेहिमनमाहिं ॥ यातेपहिले
भावसब वर्णतसुकबिसराहिं १३ ॥ अथ भावलक्षण ॥
जोरसको अनुकूलह्वै बदलैसहजसुभाव ॥ बिनब
सिताकोभावकहि भाषतहैंकबिराव १४ स्वैईभाव
ग्रन्थनमते द्वैबिधिलीजैजान ॥ इकथायीअरुदूसरो
उद्दीपनमनमान १५ थायीहैमनभावसों रत्यादि
कनवगाइ ॥ तेनिजनिज रसमेंरहैं वैविरुद्धै ढरिजा
इ १६ व्यभिचारीतिनकोकहैं कोबिदबुद्धिअपार ॥
बहुरसकेसबरसनमेंजिनकोहोयसचार १७ नवथायी
सोमूलहैनवरसकेपहिंचान ॥ व्यभिचारिनकेकाजअव
देहोंसकलबखान १८ तिनव्यभिचारिनकोसुमति द्वैवि
धिकरतविवेक ॥ तनव्यभिचारीएकहैमनव्यभिचारीए
क १९ अष्टऊवेदआदिकतेई तनव्यभिचारीजान॥ तें
तिसनिर्वेदादिसों मनव्याभिचारीमान २० तनव्यभिचा
रिनवाइन प्रकटैसोअनुभाव ॥ सहचारीथायीनके म
नव्यभिचारीगाव २१ नौथायीअरुआठतन व्यभिचा
रीपरकाश ॥ तेंतिसमनव्यभिचारियन मिलिहैंभावप

चाश २२ ॥ थायीभावलक्षण ॥ जबभावनमेंयहलख्यो थायीहैरसमूल ॥ तबइनकोवर्णनकर्यो प्रथमहैअनुकूल २३ जोरससन्मुखह्वैकछू बदलैसहजसुभाव ॥ तिनबदलानिकोकहतहैं कविजनथायीभाव २४ जोरससन्मुखजोकछू तनकबदलाहियहोय ॥ तारसकोथायीवहै यहवर्णतकविलोय २५ ॥ अथ थायीभावनाम ॥ रतिहासीअरुशोकपुनि क्रोधउछाहसुआनि ॥ भयघृणाअचरजसमुझिपुनि निर्वेदहिजियजानि २६ ॥ अथ विभावलक्षण ॥ थायीकारणकोसुकवि कहतविभावविशेख ॥ सोद्वैविधिआलम्बनरु उद्दीपनअविरेख २७ उपजैथायीजाहिलहि सोआलम्बनजान ॥ अधिकजाहितेहोतसो उद्दीपनपाहिंचान २८ ॥ अथ अनुभावलक्षण ॥जोथायीकोआनिकै प्रगटिकरैअन्यास ॥ सोईहैअनुभावयह वरणतबुद्धिनिवास २९ ॥ अथ विभावअनुभावव्यभिचारीथायी। भावकेभिन्न२रस ॥ रत्यादिकथिरभावके कारणजानविभाव ॥ कारजहैअनुभावअरु सहकारीचरभाव ३० प्रगटतविरहविभावपुनि कछुप्रगटतअनुभाव ॥ अतिप्रगटतहैंआयपुनि तनअनुभवचरभाव ३१ थायीकेयोंप्रगटते रसकहियतहैसोय ॥ ज्यहिस्वादनमेंभूलिसब महामगनमनहोय ३२ सोरसचित्तकवित्तमें कविजनचित्रसमान ॥ जाहिलखतहीरीझिकै सोहतरसिकसुजान ३३ याहीकोरसकहतहैं सोकविग्रन्थानिल्याइ॥ अपनेअपनेरूपमें नवविधिलिखेबनाइ ३४ ॥ अथ नवरसनाम ॥ प्रथमशिंगारसुहासरस करुणारौ

द्रहिजान ॥ बीररुभयबीभत्सकहि अद्भुतशांतबखान ३५ काव्यमतेयेरसनवो बरणतसुमतिविशेख ॥ नाटकमतरसआठहैं बिनाशांतअविरेख ३६ सोरस उपजततीनिविधि कविजनकरतबखान ॥ कहुँदरशनकहुँश्रवणकहुँ सुमिरणतेपरमान ३७ ॥ तत्रशृङ्गाररस प्रथमकहबेकोहेतुकथन ॥ रसकोरूपबखानिपुनि बरणेनवरसनाम ॥ अबबरणतशृंगारको जाहीतेसबकाम ३८ तिहिशृंगारकोदेवता कृष्णलखीजियेजानि ॥ औरबरणहूँ कृष्णहैं कृष्णबरणपहिचानि ३९ सोईदेवादिकनमें सबकोहैशिरताज ॥ यातेउनकोरसभयो सबनमाहिंरसराज ४० अरुव्यभिचारीसकलरस याहीमेंतेहोत ॥ याहूतेसबरसनमें यहरसराजउदोत ४१ ॥ अथ शृङ्गाररसमें आठहूरसव्यभिचारीकोउदाहरण ॥ मोहनलखियहसबनते कैउदासदिनराति ॥ उमहतिहँसतिचकतिडरति बिगचतिबिलखिरिसाति ४२ जबनिकस्योसबरसनमें यहरसराजकहाय ॥ तबबरण्योयाकोकबिन सबतेपहिलेल्याय ४३ ॥ अथ शृङ्गाररसथायीरसकोलक्षण ॥ प्रियजनलखिसुनिजोकछू प्रीतिभावचितहोय ॥ हैरतिभावशृंगारको थायीजानौसोय ४४ ॥ अथ रतिथायीभावको उदाहरण ॥ तुवहितनवतरुनेहको उपज्योहरिहिमआय ॥ सुरतिसलिलसींचतरहत सफलहोनकेचाय ४५ वे चिकनीबतियांरहीं तियहियज्योतिजगाय ॥ पूरणकरियेनेहतुव अतिदीपतिसरसाय ४६ ॥ अथ शृङ्गाररसथायीरतिकेविभाववर्णन ॥ प्रथमैंकारजहोतहै कारणतेनितआ-

य ॥ यातेंआदिबिभावको उचितबरणिबोल्याय ४७
रतिकारणजोकवितमें सोबिभावद्वैजान ॥ इकआलम्ब
नदूसरो उद्दीपनपहिंचान ४८ यातेरतिअवलम्बई सो
आलम्बनहोय ॥ रतिकीदीपतिजाहितें उद्दीपनहैसो-
य ४९ सोआलम्बननायका अरुनायकजियजानि ॥
पियप्रतितियातियाहिप्रति पियाचितमेंयहआनि ५०
तिनमेंकहियेनायका मनमथबलआधीन ॥ यातेहित
चितलायकै तिहिबरणतरसलीन ५१ ॥ तत्र रसिक
प्रियायां। दोहा॥ बरणतनारीनरनतें लाजचौगुनीचित्त ॥
भूखद्विगुणसाहसछगुण कामअठगुणोमित्त ५२ ॥ अथ
नायका लक्षण ॥ देखतहीज्यहिनारिकै नराहियउपजै
प्रीति ॥ ताहिकहतहैंनायका जोजानतरसरीति ५३
अथ नायकामेंतीनिगुण बर्णन ॥ गौरीतुलितअनूपमन हर-
णीकमलारूप ॥ बाणीलौंअतिचतुरतिहि तियबरणतक
बिभूप५४॥ अथ तिहूंगुणकेउदाहरण॥ मुखशशिनिरखिचको
रअरुतनयानयलखिमीन ॥ पदपंकजदेखतभ्रमर होत
नयनरसलीन ५५ गिरिजाशिवतनमेंरही कमलाहरिहि
यपाय॥ तूतनहरिपियहियबसी हियहरिप्राणनजाय ५६
सुरननिकारेसिंधुते रतनचतुर्दशजोइ॥ वेधामेघासिंधुते
एकैतुहींबिलोइ ५७ ॥ तत्र नायकाभेदक्रमते कथन ॥ पं
तिहीसोंज्यहिप्रीतिसो स्वकियासलजसरीति ॥ परकी
यापरपुरुषसों धनकहिधनसोंप्रीति ५८॥ स्वकिया यथा॥
मनचिंताधनचषनते चिंत्यामनकीरीति॥ सखीशील
कुलकानिअरु प्रीतमआवतप्रीति ५९ धरतिनचौकी

नगजरी यातेउरमेंल्याइ ॥ छांहपरेपरपुरुषकी जिनतिय धर्म्मनशाइ ६० ॥ तत्र स्वकीयाभेद क्रमतेकथन ॥ मुग्धा जामेंपाइये यौवनआगमरीति ॥ मध्यामेंलज्जामदन प्रौढ़ामेंपतिप्रीति ६१ ॥ मुग्धा वर्णन ॥ चपचलिश्रवण मिल्योचहत कचबढ़िछुवनछवानि । कटिनिजदरबध स्योचहत वक्षस्थलमेंआनि ६२ जिनकोलक्षणनाम ते प्रकटहोतअनयास ॥ तिनकोलक्षणभिन्नकरि मैंन हिंकरतप्रकास ६३ ॥ तत्रमुग्धापंचभेदमध्य । प्रथमअंकुरित यौबनावर्णन ॥ विधिकिसानजोउरिउये बीजतरुण ताल्याइ ॥ सोऊअवसरलहिभये अबकछुअंकुरआइ ६४ योंबालायौबनझलक झलकतिउरमेंआइ । ज्यों प्रकटतमनकोबचन बिंबपुतरिनदरशाइ ६५ ॥ द्वितियभेदसेसबयौबना ॥ तियसेसबयौबनामिले भेदनजान्योजात ॥ प्रातसमयनिशिद्यौसके दोउभावदरशात ६६ जो तियशिशुतामेंभयो यौबनआनिउदोत ॥ मीनराशिके भानुमेंज्योंनिशिसमदिनहोत ६७ ॥ तृतीयभेद नवयौबना ॥ ज्योंवयतिथिबाढ़तिकला यौबनशशिअधिकाति ॥ त्योंशिशुतानिशितिमिरघट छबिकरठेलतिजाति ६८ उकसतहीतुवउरजअरु निकसतिलंकसुभाय ॥ उकसनिकससबतियनके परीजियनमेंहाय ६९ ॥ नवयौबनाकेद्वैभेदमें प्रथमभेदअज्ञातयौबना ॥ वादिनबांधीसासु में होड़सखिनसोंलाइ ॥ वेईमेरेवियरबर उरमेंउससी आइ ७० धाइधाइलखिकौनयह भईबालतनपीर ॥ दुहूँओरउरजनधरे सेंकिसेंकिकैचीर ७१ ॥ द्वितियभेदज्ञात

यौवना ॥ सखीगुनतिजोतियगुणन रुचतकिबिहँसि लजाति ॥ मानहुँकमलकलीनबिच अलीबिहँसिरहि जाति ७२ तनसुवरणकेकसतको लसतपूतरीश्याम ॥ मनोनगीनाफटिकमें जरीकसौटीकाम ७३ ॥ चतुर्थभेद नवलअनङ्ग ॥ ताजनमदननमानहीं परेलाजबसिमाहिं॥ हठेतुरँगलौंतियनयन उचकतहूँरहिजाहिं ७४ ॥ नवल अनङ्गाकेभेदताते प्रथमअविदितकाम ॥ भईव्याधऐसीकछू छुटोखलकतेहेत ॥ धौंसचारितेचांदनी मोचितकरति अचेत ७५ ॥ नवलअनङ्गाकोभेद। द्वितियविदितकाम ॥ खेलातिहीगुड़ियाधरी गुड़वनसङ्गमिलाय ॥ निरखि निरखिफिरिआपही दृगनरहीसकुचाय ७६ ॥ पंचमभेदनवलबधू ॥ सौतिनमुखनिशिकमलभो पियचषभयेच कोर ॥ गुरुजनमनसागरभये लखिदुलहिनिमुखओर ७७ तुवदीपतिकेबढ़तही हरिलीनोंमनपीय ॥ दृगखो लेबोलेकहा अबहरिलेहौजीय ७८ ॥ नवलबधूकेद्वैभेद। तामें प्रथमनवोढ़ा ॥ हैनवोढ़पतिसङ्गजो सोवतिअधिक डराय ॥ अरुविश्रब्धनवोढ़जो पतिसोंकछुपातिया य ७९ ॥ नवोढ़ायथा ॥ सखिनकहेचलआभरण नेकु नपहिरातिबाम ॥ मनहींमनसकुचतिडरति भजतिला लकोनाम ८० मोरमुकुटधरिएकसखि बधूदिखाईछांह ॥ भगीपन्नगीलौंलपकि लगीधाइउरमांह ८१ ॥ विश्रब्ध नवोढ़ायथा ॥ यतनजोरतेनवलातिय यौंपियपैठहिराय॥ औषधिबलतेअगिनिमें ज्योंपारोरहिजाय ८२ सौं हैंआवतिभावती जबप्रियसोंहिंखात ॥ सुरतिबातहिम

वातलहि सुखतमूलजलजात ८३ हँसतिहँसतिरतिवा
तलहिं ज्योंरोईगहिनेह ॥ दमकिदमकिज्योंदामिनी पी
छेबरसैमेह ८४ तियअक्षनअरुज्ञानमधि प्रीतिनदे
तिजनाय॥यमुनगङ्गकेबीचमें ज्योंसरसुतिसरसाइ८५॥
तीजोभेदनवलबधूमें । लज्जा आसक्त रतिकोबिदाकोलक्षण ॥
एकमतेविश्रब्धसो लाजपरारतिहोति॥सरसतिजिहि
तिलाजते पियहिकामकीजोति ८६ मोहनमखोलनको
लला बिनयकरीहियलाइ ॥ पैइननैननिनहिंलख्यो र
हीलाजमोंछाइ ८७ हौंरीभीवाबालको लखिचरित्रअ
भिराम ॥ जितीबढ़तिहैलाजतिय तितोबढ़तपियका
म ८८ ॥ मुग्धाकोमुखिबैठिबो ॥ नवलामुखिबैठनिचितै
यहमनहोतविचार ॥ कोमलमुखसहिनासकति पियचि
तवनिकोभार ८९ ॥ मुग्धाकोसैन ॥ सबनिशिजागीपि
यडरनि सोईमुखधरिहाथ ॥ प्रातहिशशिअरिकोगह्यो
हैकमलनिमिलिसाथ ९० ॥ मुग्धाकोसुरतारम्भ ॥ भाज
तिनवलायोंगही उरमाधिश्यामानिशङ्क ॥ जनुतरपति
हींबीजुरी धरीमेघनिजअङ्क ९१ ॥ मुग्धाकीसुरति ॥ र
तिराचतियोंनवलातिय नेकनहितूहिराइ ॥ ज्योंहरणी
ब्याधागहे छूटनकोअकुलाइ ९२ योंनवलारतिमेंकरति
भांतिभांतिकिलकार ॥ ज्योंफेरतहीतारके फिरतजाति
सुरतार ९३ ॥ मुग्धाकोसुरतांत ॥ योंमींजतकोऊलला
अबलनअङ्गबनाइ ॥ मलेपुहुपकीवासलों सांसनजानी
जाइ ९४ टपकावतिअँसुवाकुचन ओटकियेपटलाज ॥
आलीशिवकेशीशइन यमुनबहाईआज ९५ ॥ मुग्धा

कोमान॥ लखिनकहैरुसीतिया लखिपियकर्योविचार॥ कंटगड्योतब्रधनकह्यो आवतहमेंनिकार ९६ पियपर तियकुचगहतलखि लखीचलीअनखाइ॥ तबपियधाइ लगाइमुख चूमिलियोउरलाइ ९७॥ इतिमुग्धाभेद।

अथ मध्याभेदसमानलज्जामदना॥ इतउतदोऊओरभुकि आनिबीचठहराइ॥ लाजमदनमेंधनरहै तुलाशूचिकाभाइ ९८ रमणीमनपावतनहीं लाजप्रीतिकोअन्त॥ दुहूंओरएंचोरहै ज्योंविवतियकोकन्त ९९ तियहिय पलनकपाटगति निरखिलेहुदृगकोर॥ खुलतप्रेमकीजोरते मुंदतिनेमकेजोर १०० बिभ्रकावतहीमदनके खिचतिलाजगुनआइ॥ बँधीकुरंगिनिलौंतिया उचकिउचकिमुरभाइ १०१॥ अथ मध्याकेचारिभेदमें प्रथमभेद।

उन्नतयौवनामध्या॥ लिखिविरंचिराख्योहुतो यहसँयोगइकसंग॥ कुचउतंगतियउरचढ़ै पियउरचढ़ैअनंग १०२॥ दूजोभेदउन्नतकाम॥ योंतियनैननिलाजजो लसतकामकेभाइ॥ मिल्योसलिलमेंनेहज्यों ऊपरही दरशाइ १०३ जोघटदीपकपूरिकै उमग्योनेहबनाइ॥ सोवतबतियांतेतिया प्रगटचुवतहैआइ १०४॥ तीजो भेदप्रगलभवचना॥ प्रगलभवचनानायका मध्याकोयहभाइ॥ जोरिसधुनिसोंआगरी रोकैपियहिबनाइ १०५ पियअविवेकीकामये नेकनमोहिंसुहाहिं॥ प्रतिफूलनकेमधुपको ठौरहोतहियमाहिं १०६॥ चतुर्थभेदसुरतिविचित्र॥ क्षणरतिक्षणविपरीतरचि पूरतिहियेअनंग॥ टुटतहारअरुजुटतहै कूजतधुनिखगसंग १०७ अ

धरनिदरनासाउचै दृगनफेरिसितराइ ॥ ठुनकिठुनकि धनसुरतिखन पियमनहरतिबनाइ १०८॥ लघुलज्जामध्यालक्षण ॥ लघुलज्जाहूइकमते मध्यावरणीजाय ॥ जामेंकछुयकआनिकै लाजलेशरहिजाय १०९॥ यथा ॥ होड़जीतिअकवारिकी खेलबीचतेटारि ॥ ललनरहेअैंगियाचितै ललनादियानिहारि ११० लाजपाछिलीसंगतिन तियहियनितानियराइ ॥ प्रीतिनईहितकारनहिं लखिरिसाइफिरिजाइ १११॥ मध्याको मुरिबैठिबो ॥ पियलखिमुरिबैठतिनहीं करिघूंघटकोभाव ॥ चोरीकैमन लालको गोरीकरतिदुराव ११२॥ मध्याको सुरतारम्भ॥ रतिआरम्भनिहारजब झझकिबांहसतराति ॥ भूदृग नासाअधरसों कोटिभावकरिजाति ११३ बांहगहत सतरातव करझझकतिसुकुमारि ॥ चूरचूरमनकरति हैं चूरिनकीझनकारि ११४॥ मध्याकी सुरति ॥ क्षणक रहातिथिरुथकितह्वै क्षणहीमेंअकुलाइ ॥ रतिमानतिमनभावती ठनगनठानतिजाइ ११५ योंरतिमेंसुकुमारके दृगउघरतमुंदिजात ॥ ज्योंतारेआकाशके झलकतदुरतप्रभात ११६ कानपरतमृगलोंपरे मुराछिललनकेप्रान॥ कंठठुनकनेवरभुनक दुहुनलईजवतान ११७ मध्याकी बिपरीत ॥ रमतिरमणबिपरीतयों लाजमदनमेंथाकि ॥ ज्योंरथहांकतसारथी दुहूंलीककोताकि ११८ ॥ मध्याकोसुरतांत ॥ बिगरेभूषणनाहिंसजति धनबैठीपरयंक ॥ पियतनहेरतिअनखसों फेरिफेरिदृगबंक ११९ खिनमुकुरातिहैढीठह्वैखिनलचिहेरतिगात ॥

कौतुकलाग्योसखिनको पूछतिरतिकीबात १२० ॥ इति
मध्याभेद २ ॥ अथ प्रौढ़ानिजपति अनुराग ॥ बीतेदिनडरला
जके अबआवतयहप्रान ॥ एकौपलनिजकंतको अंत
नदीजैजान १२१ जबवनितावृषराशिमें यौवनरविदर
शाइ ॥ मदनतपतप्रतिद्योसमें बढ़िलाजशीतघटिजा
इ १२२ ॥ प्रौढ़ाके चारिभेदमें प्रथमभेद । उदभटयौवना ॥
गजगमनीतुवगतिनिरखि रीझिरहींसबबाल ॥ कुचकु
म्भनसोंपेलिके बशकरिलीनोंलाल १२३ ॥ दूजोभेदम
दनमदमाती ॥ कुचपियहियहिलगाइतिय अंगमोरिअं
गराइ ॥ उरजगहतअठिलाइके नैनमिलैमुसुकाइ १२४
तीजोभेद लुब्धाप्रतिप्रौढ़ा ॥ धनिस्वरूपअरुसुमतिको सर
ससबनतेजानि ॥ गुरुजनदुरजनईशसम शशिनवायेआ
नि १२५ ॥ चौथोभेद रतिकोविदाप्रौढ़ा ॥ बिमलगंगसीधनर
चीविधिअनंगरसदानि ॥ जाप्रसंगमेंपाइये सुखतरंगकी
खानि १२६ रतिस्वरूपधरिअवतहैं सिखैभारतीभाइ ॥
तऊरावरीसुरतिगुण केहूसकैनपाइ १२७ ॥ अपरद्वैभेद ॥
रतिप्रियाअनंदातिसंमोहाप्रौढ़ा ॥ येदोऊप्रौढ़ानको कबिव
रणतयहजानि ॥ इनहूंकोवरणनकियो उदाहरणमेंआ
नि १२८ ॥ रतिप्रियायथा ॥ पियतरहतापियअधरनित
भूखप्यासबिसराय ॥ चखैनऊखमयूखवहवापियूखकोपा
य १२९ लालरङ्गमेंपगिरही बहियतगीइकखान ॥ सदा
सुहागिनिफूलसी सदादामिनिजजान १३० ॥ अनंदाति
संमोहा ॥ गहतबांहपियकेअली छुटोकम्पतनआइ ॥
भजीदृगनतेलाजसुधि हियतेगईबिलाइ १३१ ललन

गहतसुखतेगयो मोहनींदलौछाइ ॥ मारकरनकीसुधि अली जगीमोरहीआइ १३२ ॥ प्रौढ़ाकोमुरिबैठिबो ॥ पिय चितवततियमुरिगई कुलहितपटसुखलाइ ॥ अमीच कोरनकेपियत घनलीनोशशिछाइ १३३ ॥ अथ प्रौढ़ा कोसुरतारम्भ ॥ बांहगहतसीवीकिरति कुचपरसतसतरा इ ॥ पियनिजमहतबढ़ाइकै रुचिउपजावतिजाइ १३४ प्रौढ़ाकीसुरति ॥ आलिङ्गनचुम्बनकरत कोककलिनके घात ॥ दम्पतिरतिरसलेतमें कहूंननेकअघात १३५ योंउरलागतिसेजते बामश्यामगहिबांह ॥ ज्योंबिजुरी घनश्वेतकी दुरैअसितघनमांह १३६ ललनमुकुतिटूट तपरे बालहाथकुचआइ ॥ बूंदबचायोशिवमनो सरसी रुहशिरलाइ १३७ ॥ प्रौढ़ाकीविपरीत ॥ टीकाछुटिविप रीतखन पर्योउरोजनआइ ॥ हाथचलायोशशिमनो कमलकलीअरिपाइ १३८ छिनकलेतिहैसुरतिमुख छिनराचातिविपरीति ॥ अधऊरधपलटतरहै बिचकौ तुककीरीति १३९ ॥ प्रौढ़ाकोसुरतांत ॥ ढुरकिपरीकि हिउरबसीनखकुचशीशसुहाइ ॥ तरुणछप्योमनुशिराशि खर हैजकलादरशाइ १४० जेआभरणसाजेहुते करि बेकोरसरङ्ग ॥ तिनतेअतिछबिदेतहै स्वेदबूंदतुवअङ्ग १४१ ॥ इतिप्रौढ़ा ॥ अथ पतिदुखितावर्णनं ॥ इनभेदनमें जोकोऊ रसभासाविख्यात ॥ मुग्धाकुलटाहूबिषै सो गुणपायोजात १४२ ॥ मूढ़पतिदुखिता ॥ अतिमीठेअ रुरसभरे लालरसालसुभाइ ॥ तनिककचाईकठिनई प्रकटकरतिहैआइ १४३ ललितसलोनेललनपै त

जिगुरुजनकीश्रान ॥ घरैलगतिहैंश्राइज्यों नेहपकोपै कवान १४४॥ बालपतिदुखिता ॥ बारेपियकेहाथतिय स खतिकुचपैलाइ ॥ कमलनपूजतशिवमनों बलीमदनको पाइ १४५॥ वृद्धपतिदुखिता ॥ धरतिनधीरजकामते वृद्ध नाहको पाय ॥ बालश्वेतश्रवलोकिमुख बालश्वेतह्वै जाय १४६॥ श्रथ मुग्धातेधीरादिभेदनिवारिबोकथन॥ मुग्धा मेंजोमानको बरणतहैंकबिल्याइ ॥ सोविश्रब्धनवोढ़में कछुयकपायोजाइ १४७ मानहेतधीरादिको यहजानत सबकोय ॥ पैमुग्धामेंकैसहूँधीरादिकनाहिंहोय १४८ धी-रादिकमेंमूलहै ब्यंग्यादिककीटेक ॥ सोमुग्धामेंहोत नहिं ब्यंग्याब्यंग्याविवेक १४९॥ धीरखंडिताकोबिवेकप्रसंग पायकथन ॥ मानहेतधीरादिश्ररु खंडितहूकोजान ॥ तिनदोनहुकेभेदमें यहकबिकरैंबखान १५० लघुमद्धिम गुरुमानको सुवहेतनकोपाइ ॥ धीरादिककेभेदसों होत तियनमेंश्राइ १५१ हेतखंडिताकोकहै सुगतिचीनही जान ॥ तहांमिटैगुरुमानहित धीरादिकहूँश्रान १५२ पुनिधीरादिकभेदमें मिलैखंडितासाथ ॥ सोयहमधिम श्रधीरहै यहजानतबुधिनाथ १५३ यातेकोधितदुहुनमें भेदधरतनहिंश्रान॥ कोउधरेयहभांतिसोंभिनभिनसोइ बखान १५४ चिह्नहेतगुरुमानके तेद्वैविधिजियजात ॥ इकसाधारणदुतियजिय श्रसाधारनहिंमान १५५ नि-श्चयरतिप्रकटैनहीं सोसाधारणजोय ॥ चिह्नश्रसाधा-रणसुतो रतिपरकटकरिहोय १५६ पागछुटीदृगश्ररुणई श्रलसानादिकभेद ॥ येसाधारणचिह्नहैं जानिलेहु

बिनुखेद १५७ दृगनपीकअंजनअधर नखरेखादिक
और ॥ चिह्नअसाधारणविषे बरणतकबिशिरमौर १५८
सोइनहैबिधिचिह्नसे धरेआनियहटेक ॥ धीरादिकयह
खंडिता जातेलहैविवेक १५९ साधारणचिह्नैधरै हेत
व्यंग्यकोपाय ॥ केवलधीरादिकविषे यहमनसमुझिब-
नाय १६० चिह्नअसाधारणसुतो जानखंडिताहेत ॥
खंडितहीमेंधरतहैं जेकबिबुद्धिनिकेत १६१ जोकोउयह
परमानकी साखीचहैबनाइ ॥ सोदेखैरसमंजरी उदा
हरणकोजाइ १६२ ॥ अथमध्याप्रौढ़ाधीराभेदबर्णनं ॥ मान
भेदतेतीनविधि मध्याप्रौढ़ाहोइ ॥ धीराऔरअधीरति
य धीराधीराजोइ १६३ कोपकरैजोव्यंग्यविधि सोधी
राजियजान ॥ जोरिसकैअव्यंग्यसों सोअधीरपहिंचा
न १६४ व्यंग्यअव्यंग्यदोऊविषे कोपेधीरअधीर ॥ म
ध्याप्रौढ़ादुहुनमें यहवरणतकविधीर १६५ ॥ अथ मध्या
धीरादिकलक्षणं ॥ व्यंग्यवचनधीराकहै प्रकटरिसाइअ
धीर ॥ मध्याधीराधीरसों रोइजनावैपीर १६६ ॥ अथ धीरा
दिभेदसाधारणसुरतिचिह्नकेउदाहरण रसमंजरीमतेमध्याधीराय
था॥चलितअलिनयुतकुंजपिय स्वेदचल्योजोगात॥तिह
सुखवतिहौंबातमें लैनालिनीकोपात १६७ तुमअवसेरत
मोदृगन गईनींदजोहिराइ॥ सोईलाललागीमनोदृगन
तिहारेआइ १६८ शिथिलगातपियरोबदन अंगअंग
अलसात॥कौनबालसोंलालतुमलरिआयेहौप्रात १६९
मध्याअधीरायथा ॥ कहूँठगेकतहूँखँगे अतिसगबगेस
नेह ॥ लाजपगेदृगरगमगे जगेकौनकेगेह १७० ला

लएकदृगअग्निते जारिदियोशिवमैन ॥ करिल्यायेमो
दहनको तुमहूपावकनैन १७१ यहीबड़ाईतुमलखी
मेरेढिगठहिराइ ॥ हाथपरतहौऔरके पांयपरतमोआ
इ १७२ रीतसंयोगीबरणकी राखतहौशिरमोर ॥ गुरु
ताईदेऔरको मिलेरहतमोओर १७३ ॥ मध्याधीराअधी
रायथा ॥ निशिबिछुरीकछुबचनकहि योंरोईलखिकंत ॥
औटिऔटिउफनायज्यों क्षीरचुवतहैअंत १७४ कतन
बोलियतललनके योंपूछतगहिहाथ ॥ धनिअँशुवाघन
बूँदलौं झरेबातकेसाथ १७५ ॥ अथ मध्याधीराअधीरा॥
आकृतगोपनासादराबर्णनं ॥ आकृतगोपनसादरनि जानि
जमतिकेतंत ॥मध्याधीरअधीरकोप्रौढ़ाधीरकहंत १७६
रीतसुब्यंग्याब्यंग्यकी यामेंपाईजाति ॥ मध्याधीरअधी
रयह यातेसुभटहेराति १७७ ॥ मध्या धीरअधीर आकृत
गोपनायथा ॥ पियविनवततूसुनतनाहिं दियेतूलमेंकान॥
लालओरहेरतनक्यों दृगदुखदेतिनिदान १७८ ॥ मध्या
धीराअधीरासादरा ॥ जेकहियतआदरवचन मधुरचीकने
लाइ ॥ विषकीशंकप्रकटकरत सहतधीवइकभाइ १७९
प्रौढ़ाधीरादिकलक्षण ॥ धीरारिसरतिखिनकरै हनैअधी-
ररिसाइ ॥ प्रौढ़ाधीरअधीररिसगोपहनैअनुखाइ १८०
प्रौढ़ाधीरायथा ॥ पियआवतआदराकियो बोलीकछुमुसुका
इ ॥ तनिककंचुकीगहतधन तानीभौंहबनाइ १८१ दुरी
गांठिजोबालहिय लखीनकेहूनाथ ॥ प्रकटबालमाधिगां
ठिलौ भईगहतहीहाथ १८२ ॥ प्रौढ़ाअधीरायथा ॥ पागदुरी
पीरीखरी पियमुखपरीनिहारि ॥ फूलछरीकरमेंधरी घ्रन

खभरीझकझकारि १८३ हहामहाकरनारितेयोंछुटिलाग्यो नाह॥मनचंदनकेडारिते अहितमालतरुमाह १८४॥ प्रौढ़ाधीराअधीरायथा ॥नैनलालताकिरिसभरी कछूनबोलीबाल॥बांहगहतहीउरहनीतनीतोरिकैमाल १८५॥ अथ ज्येष्ठाकनिष्ठा लक्षण ॥ जाहिकहतापियप्यारअति ताहिज्येष्ठानाम ॥ जापरकछुघटिप्यारहै सोकनिष्ठकाबाम १८६ ॥ यथा ॥ किनाविचित्रयहखेलबलि दीन्ह्योतुम्हैं बताइ ॥ मूठिडारिवाकेदृगन मोमुखमाड़तधाइ १८७ अधिकठगीहौंरावरी लखिचतुराईनाथ ॥ यकदिखाइ शशिएककै हियेधरतहौहाथ १८८ ॥ ज्येष्ठाकनिष्ठाकेभेदमें। धीरादिकथनं ॥ धीरतुआदिकभेदजे षटवरणेकविजान ॥ ज्येष्ठकनिष्ठप्रकारते द्वादशहोतनिदान १८९ मुग्धाकेद्वैभेदइन द्वादशभेदानिशङ्क ॥ तेरहविधिस्वकियानको वरणतबुद्धिउतङ्ग १९० ॥ स्वकीयापतिव्रताभेदकथनम् ॥ स्वकियाऔरपातिव्रता मेंयहभेदविचारि ॥ वह सनेहयहभगतिसों सेवातिहैनिरधारि १९१ ॥ इतिस्वकीयाभेद ॥ अथ परपुरुषानुरागापरकीयाउदाहरण ॥ निजद्युति देहदिखाइकै हरैऔरकेप्रान ॥ नेहचहतिनिशिदिनरहै सुन्दरिदीपसमान १९२ ॥ परकीयाउभैभेदऊढ़ाअनूढ़ा ॥ ऊढ़ाब्याहीऔरसों करैऔरसोंप्रीति ॥ बिनुब्याहीपरपुरुषरतियहैअनूढ़ारीति १९३ ॥ ऊढ़ायथा ॥ निजपतिलाम्पतकुंजअरु उपपातिलागतखंज ॥ नैनअचलचलमंजुतिय दोऊविधिमनरंज १९४ सासुखड़ीडाटतिरहै नँनदीजुदीरिसाइ ॥ नेहलगतहरिसोंसबै रूखी

भईबनाइ १९५ ॥ अनूढ़ायथा ॥ रूखेहोतहुवासलौं चोरीदेतिजनाइ ॥ बिनाबढ़ेशिरनेहजो नेहचढ़्योशिर आइ १९६ ब्याहसुनतिउरदाहते खरीहोतिबेहाल ॥ नेहदहीहैल्याइकै नेहदहीमेंबाल १९७ लरिकाईसबते भली जामेंफिरहिंनिशंक ॥ ब्याहेपतिपर्यंकदुख अरुक लंकअकलंक १९८॥ द्वितीयभेद असाध्यापरकीयालक्षणं ॥ पुनपरकीयाउभयविधि वरणतहैंकविलोइ ॥ एकअसा ध्यादूसरी सुखसाध्याजियजोइ १९९ प्रेमलगैनहिंमि- लिसकै सोईअसाध्याजानि ॥ चहैमिलनजोसहजहीं तियसुखसाध्यामानि २०० बुधिबलमनकीलागको प्र गटदोषबहिराइ ॥ परकीयाहियमेंधरै असाध्यादिको ल्याइ २०१ कोऊअसाध्यादिकनको वरणततीनिप्रका र ॥ प्रथमअसाध्यदुसाध्यअरु सुखसाध्यानिरधा र २०२ बहुरिअसाध्यदुसाध्यहै धरमसमीलाआदि ॥ वृद्धिबधूआदिककहै सुखसाध्याकबिवादि २०३ ॥ असा ध्यापरकीया प्रथमभेद सभीताअसाध्या ॥ अधरधरैकितयै नहो अपनोधर्मगंवाइ ॥ बंशीलौंतजिबंशको मोहन मिलिहौंजाइ २०४ ॥ द्वितीयभेदगुरुजनसभीताअसाध्या ॥ श्याममधुपानिशिदिनबसै हियेतामरसमाहिं ॥ गुरुजन उरदुरजनभये देखनदेखनछाहिं २०५ ॥ तृतीयभेददूती बरजिता असाध्या ॥ जोनिजहियहूंसोकहत मोजियखरो डराइ ॥ सोअंतरदुखऔरसों कहोकवनविधिजा इ २०६ ॥ चतुर्थभेद अतिकांताअसाध्या ॥ सजलश्याम निशिश्याममैं सेतजोनिमैबाल ॥ दुहुपटघनमैतनत

ड़ित केहूदुरतिनलाल २०७ ॥ पंचमभेद खलघ्रष्ठअसाध्या ॥ समुझिबोलियेवाहयह खरोचबाईगांव ॥ नाउंलेतहरिकोअली हरमैंदीजतपांव २०८ ॥ सुखसाध्यामधि प्रथमभेद वृद्धबधूसुखसाध्या ॥ वृद्धकामिनीकामते सूनधाममेंपाइ ॥ नेवरझनकावतफिरै देवरकेढिगजाइ २०९ ॥ दूजोभेद बालबधूसुखसाध्या ॥ जोछतियांबारेललै नहिंपरसोकरलाइ ॥ चहतिपरोसी हाथतेखरीमसोसीजाइ २१० ॥ तीजोभेद नपुंसकबधू सुखसाध्या ॥ तुमसांचोविररतिकरै सुखउपजैजेहिआइ ॥ नामहेतफलमांगिये पतिदेवतनमनाइ ॥ २११ चौथोभेद विधवाबधू सुखसाध्या ॥ ओपभरीनिजरूपछबि देखतदरपनमांह ॥ रोइनाहकेकामके हाथगहाईबांह २१२ कहाभयेनखलौंतजे सबशिंगारजोबाम ॥ तुवतनत्रसातिननेकहूं मनहरिबेकोकाम २१३ ॥ पंचमभेद गुणीबधूसुखसाध्या ॥ बांकीताननगाइके टांकीसीहियदेइ ॥ ढांकीछतियांकोकछू झांकीदैजियलेइ २१४ गावतहैसुरतालमों नागरिढोलबजाइ ॥ श्रुतिधारनकेमनरही तारनमाहिंनचाइ २१५ ॥ अष्टमभेद गुणरिझवती सुखसाध्या ॥ होतरागबशएकयह सबजगजानतएेन ॥ येरागहुबशिकरातिहै उलटिऐनतियनैन २१६ ॥ यारमणीकीबातकछु मनसमझनाहिंजाइ ॥ रीझरहीहैबीनसुनि कैपरबीनरिझाइ २१७ ॥ सप्तमभेद सेवकबधू सुखसाध्या ॥ बिकलहोननहिंदेहुंगी अपनेप्रभुकोजीय ॥ दिनसेवाकरिपीयपगनिशिसेवाकरितीय २१८ ॥ निरांकुशसुखसाध्या ॥

योबनवंतीजोनडरुपियकोमानैनेक ॥ औरतियाछलछं
दपढ़ि गावैतानअनेक २१६ देवनपूजनजाहिअरुकर
हिवनहिकीसैल ॥ औनिरअंकुशनारिजो फिरैतियन
कीगैल २२० जिहिंपियअटक्योऔरसों अतिरोगीकी
नारि ॥ औरदूसरीवामयह सुखसाध्यानिरधारि२२१॥
द्वै भेदपरकीयाके और ॥ नामलक्षण कथनं ॥ ऊढ़अनूढ़ादु
हुनमेंयेद्वैभेदबिचारि ॥ पहिलेअदभूताबहुरिउदभूदि
तानिहारि २२२ मिलनपेचअपनेकरै अदभूतातिहि
जान ॥ जोनायकपेचनमिलै उदभूदिताबखान २२३ ॥
अदभूतायथा ॥ येतेहैंरंगलालते करैनकोऊपाइ ॥ बिनु
प्रीतमवरवराणिनहिं इनआंखिनकीजाइ २२४ ॥ नायका
स्वयंदूती ॥ मोअंगियातनतकिरहे क्योंहरिडीठलगाइ ॥
जोनीकोहैतौतुम्हें दैहोंआजुपठाइ २२५ सुधिनलेति
याबागकी मालीहूरिसमानि ॥ बनमालीक्योंथैभिरहे कृ
पाकीजियेआनि २२६ ॥ उदभूदितायथा ॥ दीपकलों
झाँपतिहुती ललनहोतियहबात ॥ ताहिचलतअबफू
ललों बिगसनलाग्योगात २२७ ॥ अवस्थाकेभेदते षट
विधि ॥ परकीयाकथन ॥ उदभूतादिकदुहुनमें येगुप्तादिक
जानि ॥ तेसबषटबिधिहोतहैं यहकबिकरतबखान २२८
गुप्तसुरतिगोपनकरै भयोहोइगोहोत ॥ करैबिदगधा
चतुरई निजक्रममाँझउदोत २२९ जाकोहितपरपुरुष
सों प्रकटहोत अनयास ॥ वहैलक्षितासोत्रिविध हेस
सुरतिपरकास २३० कुलटातासोजानिये जोचाहैबहु
मित्त ॥ इच्छाबातभयेमुदित मुदिताकोयहचित्त २३१

बिनसैठौरसंकेतकेअरुसंकेतसंदेह ॥ जायनसमयसंकेततिहि दुखअनसैनायेह २३२॥ प्रथम भेदवर्तमान सुरतिगोपना भूयथा ॥ अलिहोगुंजनहितगई कुंजनपुंजन आजु ॥ कंटअटेबस्तरफटे अंगकटेबिनुकाजु २३३ ॥ प्रत्यक्षमानसुरतिगोपना भुवियथा ॥ हौंनजाउंगीकैसहूं फूल लेनकोबाग ॥ मरनहोइगोगातयह लागेपुहुपपराग २३४ ॥ भविभरत वर्तमान सुरतिगोपनायथा ॥ जिहिगुंजनतोरनिपरी येखरोटतनपाइ ॥ कहाकरौंअबल्याइहौं फिरितेरेहितजाइ २३५॥ वर्तमान सुरतिगोपनायथा ॥ येयह ढोटाकौनको मेरोमहीचुराइ ॥ मुहँसुधाइकैआपनोसाह भयोहैजाइ२३६ बड़ोअनोखोछोहरोदेखोरीयहआनि ॥ मेरीनीबीपीतजिनतोरीगेंदाजानि २३७कैअचेतयाखेत मेंगईहुतीबौराइ ॥ प्रेतजानिइनहेतके भाख्योमोहिंबनाइ २३८ लखतिकहाहौसोनहीं करिकाहूसोंप्रीति ॥ उदर लगावतनेहमिसि रचिराख्योबिपरीति २३९॥ दुतीयभेद बिदग्धातामेंस्वयंदूतीबचनबिदग्धाबिवेककथनं ॥ घरहैबचनविदग्धअरु स्वयंदूतिकोएक ॥ यातेहैइनदुहुनमेंकरबो कठिनबिवेक २४० यहीबातकोसमुझिके कबिअपने मनमाहिं ॥ जोराखतहैएकको दूजीराखतनाहिं २४१ जोराख्योहैदुहुनकोतिनकरियहैबिचार ॥ इनदुनहुन केभेदमें यहकीनोविस्तार २४२ जोतियसनैसँकेत की करैमीतकोकोइ ॥ काहूकोदैवीचतौबचनाविदग्धा होइ २४३ करैसैनसंकेतवा रचैजाइजोप्रीति ॥ बिनअंतरातियपुरुषसों स्वयंदूतिकारीति २४४ क्रिय

5933 dt 5.3.62 2.25

विदग्धअरुबोधको याहीबिधिमिलिजात ॥ तिनदोनों केभेदमें जानिलेहुयहबात २४५ क्रियविदग्धकरिचतुरई करैआपनोकाम ॥ सैनबुझावैकरिक्रिया सोबोधक अभिराम २४६ ॥ विदग्धामेंबचनविदग्धायथा ॥ रेरँगिया करिराखियो सकलरंगकोसाज ॥ सांझपरेहोआयहौं श्यामबसनकोआज २४७ श्यामवारपगपरतसुन बाम कह्योमुसुकाइ ॥ लगोननेहलुटायहो निशिलौंनेहसुखाइ २४८ ॥ क्रियाविदग्धायथा ॥ थकितभईहौंहालहीं लखिचरित्रयेबाल ॥ डारिउरबसीलालकी लखैउरबसीलाल २४९ खिनखिनघटकाकाढ़ियत मुरिमुरि लखिलखिनाहिं ॥ कूपसलिलघटसेभरै कूपसलिलघटमाहिं २५० ॥ क्रियाविदग्धापतिबंचितायथा ॥ पतिदेख तहीहोयजो उपपतिकेरसलीन ॥ ताहिकहतपतिबंचिता जेपण्डितपरबीन २५१ ॥ यथा ॥ रोगठानिकैढीठतिय निपुणबैद्यकरिपीठ ॥ बैठीपतिसोंपीठदै जोरिपीठसों दीठ २५२ ॥ क्रियाविदग्धामेंदूतीबंचिता ॥ दूतीसोंसवतूति करि मिलैनताहिजताइ ॥ यथा ॥ दूतीछलिजो आयतू मोसँगलायोनेह ॥ तुवअछेहपनआनकै कियोहियेमेंगेह २५३ ज्वानिनकीमतितेभई बूढ़िनकीमतिनीच ॥ बीच पाइकैमोहिंइन मोसोंपायोबीच २५४ ॥ तीजोभेदमेंलक्षिताासोंहेतुलक्षिता ॥ तहिंउठिचितवतहीजबैहरिदीन्ह्यों मुसकाइ ॥ तूकतरदनधरैअधरदीजैमोहिंबताइ २५५ ॥ सुरतिलक्षितायथा ॥ कोहैमालीचतुरजो सरससींचिरस जाल ॥ याकञ्चनकीबेलमें मुक्लगायेलाल २५६

कौनमहावतजोरसों बशकरिबेकीचाइ॥ तुवयोबनगज
कुम्भपैअंकुशदीनोआइ २५७ ॥ प्रकाशलक्षितायथा ॥
प्रकटभईतुवरूपकीनेहलगतहीजोति ॥ सबजगजानत
नेहते बालनशोभाहोति २५८॥ प्रकाशलक्षिताद्वितीयमते॥
जेहिकारोपटपीयरो सोमेरेमनमाहिं ॥ आवतिलोगन
केवदन कारीपीरीछाहिं २५९ ॥ चौथोभेदकुलटायथा ॥
बिधिसुनारअद्भुतगढ़ी तियकीसुवरनदेह॥ जेहिअनेक
जगजटनके तुलितएकहीगेह २६० पतिसमानसबजग
बसै कामवतीजगमाहिं ॥ ज्योंमुदाजशिलमेंसबै होत
मोरकीछाहिं २६१ ॥ पंचमभेदमुदितायथा ॥ कालिनन्द
घरकाजहै जैहैंसबमिलिप्रात ॥ चलतबातयहफूलमो
फूलल्ग्योसबगात २६२ बधूरहैघरहमचलैं चलतबा
तरसलीन॥भरकीकदलीपत्रलोंतियकंचुकीनवीन२६३
षष्ठमभेदअनुसैनामध्यप्रथमभेदस्थानविघटना यथा ॥ बन
बीततबीत्योजुकछु कह्योजातसुनहाल॥ ऊखंहिउखरत
निपटहीं सूखिगयोमुखबाल २६४ पावसदेनशरापअ
लि पतिऊपरपतिसोइ ॥ दीबोकौनबसंतको जोदीनो
पतिखोइ २६५ ॥ दूजोभेदभावस्थानशोचनयथा ॥ करि
उजारनैहरचली शोचतकौनसुभाइ ॥ देउँजाइससुरारि
के ऊजरगेहबसाइ २६६ फूलमूलमोकरचितै तूकत
भईउदास॥ कहाभयोबासासुरे जोफुलवारीपास २६७॥
तीजोभेदअनुसयनातामेंप्रथमभेद स्वैनधिष्ठितसंकेतस्थलरचनानु
गवनअनुसयनायथा ॥ तीजोअनुसयनाविषे प्रथमभेदयह
गाइ ॥ मीतगयोसंकेतले तियसकतनतहँजाइ २६८॥

यथा ॥ गुहतमालनँदलालजिहि कालसुनेवनजात ॥ मदनज्वालकीज्वालसों छयोबालकोगात २६९ बंसी लोमनमीनको खींचलबंशीटेरि ॥ निकसिचलनकोधाम ते बामनपावतफेरि २७० ॥ द्वितीयभेदअस्थानधिष्टसंकेत वर्णवनुगवननष्टमानाअनुसयना ॥ पुनिअनुसयनातृतियमें भेददूसरोआइ ॥ जोंपियपाससंकेतको चिह्नलखेपछि ताइ २७१ घरीटरीनटरीकहूँ शोचनभरीविशेखि ॥ परीछरीसीह्वैरही हरीछरीकरदेखि २७२ फूलछरीसंके तकी मोहनकरमेंपाय ॥ अवसरचूकेडोमिनी त्योंरमनी पछिताय २७३ ॥ प्रथमनोरथा॥ नैनचहैसुखदेखियेमनसों कछूदुराइ॥ मनचाहतदृगमूंदिकेलीजैहियेलगाइ २७४ प्रक्रियाकोसुरतारम्भ ॥ मोकरदोऊभरिदिये मनचीते फलआजु ॥ अलपवृक्षकोछांहइन कियेकलपतरुका जु २७५ नैनमिलतमुखमेंबसी मुखबोलतहियआइ॥ हियलावतकछुसुधिनहीं कितगइलाजभगाइ २७६ ॥ परकीयाकोसुरतांत ॥ योंसंकेतसुखलेतहरि पियआतुरगर लाइ ॥ ज्योंचोरीगुरपायकै तुरतलीजियेखाइ २७७॥ राधातनफूलनमिलो यातनहरिकोगात ॥ नूपुरधुनि खगधुनिमिली भलेबनेसबसात २७८ ॥ परकीयाको सुरतांत ॥ फूलमालसीबालजो मैंल्याईउभराइ ॥ ऐसी अंगलगाइसो कतडारीकुंभिलाइ २७९ पटझारतिपों छतिबदन मुदरीदरपनहेरि ॥ दूतीसोंअनखातिहै लाज वतीदृगफेरि २८० सबजगहाख्योपैअलख काहूकोन लखात ॥ कुंजनमेंरतिकैदोऊ पंछीलोउड़िजात २८१॥

स्वकीयापरकीयाभधिबंकानेमकथनं ॥ स्वाकियापरकीयादोऊ बिनानेमपरमान ॥ कामवतीअनुरागिनी प्रेमअसकता जान २८२ ॥ कामवतीउदाहरण ॥ कतमोकरलावतकुचन कतगाहियतलपटाय ॥ आलीचाटेओसके कैसे प्यासबुझाय २८३ ॥ अनुरागिनीउदाहरण ॥ पियकुंडलकोचिह्नजो पर्योबालकीबांह ॥ खिनचूमतखिनलखिरहत खिनलावतउरमांह २८४ नाइनाइजिहिचखनमें मदपियदियोपियाइ ॥ बारबारतिहिचखतिहै तियअधरनिमेंलाइ २८५ ॥ प्रेमअक्षयथा ॥ येरसलोभीदृगसदा रोकेहूँअकुलाइ ॥ मनभावनमुखकमललखि परतमधुपलोंजाइ २८६ हरिलखिइननैननिलिये करिकैदुसहसुभाय ॥ खींचेआवतबलकिये छुटेलगतचढ़जाय२८७ अधिकरूपदरशायइन दृगदूतनमिलिसाथ ॥ मोमनमानिकसोतिही बेच्योहरिकेहाथ २८८॥ इतिपरकीयाभेद ॥ अथ सामान्याभेद ॥ गरवकोटिराखैतऊ लहैलोटकेभाइ॥ दाममोटयेलेतहैं कामचोटउपजाइ २८९ ल्यायेपायलहोभली परीरहैगीपाइ ॥ लालदीजियेमालजो राखौं हियमेंलाइ २९० मुक्कमाललखिधनिकह्यो यहअजगुतिहैनाहिं ॥गंगतिहारेउरबसे शिवमेरेउरमाहिं२९१॥ सामान्यामध्यस्वतंत्रसामान्या ॥ सगरीवारवधूनमें प्रभुता लहैजोबाम ॥ अपनीइच्छासोंरमै ताहिस्वतंत्रानाम २९२ ॥ उदाहरण॥ संगपाइमनमोदसों रचिशुभनादविनोद । बैठिमोदमेंधनकराति छलबलसोधनगोद २९३ ॥ दूजी जननीअधीना ॥ बारबिलासनिहोइजो ज

ननीकेआधीन ॥ कैगुरुजनशासनरमै सोजननीआधी
न २६४॥ यथा ॥परहथवसियेनिरदई धनभोजनकेचा
इ ॥ धनीप्राणपक्षीनको हनतकुहीलोंधाइ २६५॥ तीजे
नेमता सामान्या ॥ दिनप्रमाणकेदरबदै जोतियराखीहो
य ॥ बारबधूकेभेदमें कहीनेमतासोय २६६॥ यथा ॥ पि
यकेनितचितदेनलौं चितहितबढ़तबनाइ ॥ हेमनेमघट
जातही प्रेमनेमघटजाइ २६७ ॥ अथप्रेमदुःखिता ॥ एक
ठौरबसिप्रेमजो दोयबारतियआनि॥ बिछुरतहीदुखल
हैसो प्रेमदुःखिताजानि २६८ ॥ यथा ॥ मोहिंरावरेहा
थदै धनकीनोजिनहाथ ॥ अबछूटतवहपापिनी छुट्योन
वाकोसाथ २६९ चितहितबाढ़तनेमयह बंध्योजीवसुख
पाय ॥ अबअलिछुटवतहोतदुख कीजैकौनउपाय ३००
सामान्याको सुरतारम्भ ॥ बराणिसकतसैबारतिय यहतिय
रम्भकहोइ ॥ सुखऔरनकोसुरतिको याकेप्रथमहिहो
इ ३०१ ॥ सामान्याकी सुरति ॥ सुरतिरंगिनीयोलपकि ध
नीगरेलपटाइ ॥ ज्योंतरंगिनीसिंधुको करितरंगमिलि
जाइ ३०२ ॥ सामान्याको सुरतांत ॥ नयेरसिकदेखेनये
लेतत्रियनकेप्रान ॥ कहाकीजियेकनकलै जातेटूटेंका
न ३०३ ज्योंआवतनिशिमीतको चितवतरहीलजाइ ॥
त्योंअबधनहितकैखरी मांगतचितसकुचाइ ३०४ सुख
हितकैगुणआपने चितराखतनिजगोइ ॥ करिधनअप
नेहाथफिरिधनअपनीमतिहोइ ३०५ ॥ इतिसामान्याभेद॥
अथसुरतिदुःखिता वक्रोक्तिगर्विता वर्णनं ॥ अन्यसुरतिदुखि
ताबहुरि तीनगर्बिताआनि ॥ औरमानिनीनेमबिनु सक

लतियनमेंजानि ३०६ पराचीनमतिमाहिये भेदगनेनहिं
जात ॥ करेनवीननकोटिकै यहविधिसोअविदात ३०७
अन्यसुरतिदुखिताकही खंडितातेयहजान ॥ स्वाधिन
पतिकातेकढ़ो भेदगर्विंतामान ३०८ मानिनिकोकढ़िमा
नते तिहूंभेदतबल्याइ ॥ अष्टनायकाभेदते भिन्नादि
योठहराइ ३०९ यद्यपिधरेनजीतये अष्टनायकामाहिं॥
तऊअवस्थाभेदतेसकलभिन्नह्वैजाहिं ३१० जवनवम
तिमेंयोंभयो तिहूंभेदअविदात ॥ ग्यारहसैबावनातियन
मानगनेनहिंजात३११ ॥ अन्यसुरतिदुःखितालक्षण॥ निज
पतिरतिकोचिह्नलखै औरतियनकेअंग ॥ अन्यसुरति
दुखितासोई जेहिदुखचढ़ैअनंग ३१२ पियतनलखि
रतिचिह्नजो दुखितखंडिताहोइ ॥ ज्योंयहदुखपियसुर
तिक्षण औरबालतनजोइ ३१३ यहैभेदइनदुहुनमें
जागतहैंकविजान ॥ जानतहूँपियअवगुणनि दुखीदोउ
पहिंचान ३१४ ॥ अन्यसुरतिदुःखितायथा ॥ तेरोप्राण
प्रकाशबर नेहबाससरसाइ ॥ मोकारणल्यायोनहीं आ
योआपलगाइ ३१५ गईबागकहिबातहौं तुवहितले
नरसाल॥ सोनहिंल्याईआपही छकिआईहैबाल ३१६
कहाकहौंतोसोंअली अपनेअपनेभाग ॥ मोहिंदियो
तनकनकाबिधि दीनोंतोहिंसुहाग ३१७ ॥ गर्विंतालक्षणं॥
गरवनउपजतहैतियहि जौलोंनहिंबशनाह ॥ सोईगर
विताकोभवन स्वाधिनपतिकामाह ३१८ बातकहैजोगर
बकी सोइगरविताजान ॥ वरणेपतिआधीनता स्वाधिन
पतिकामान ३१९ सोइगरविताउभयविधि बरणतहैंक

विलोइ॥बक्रोकतिहैएकपुनिद्वितियसुगरवितहोइ ३२०
बक्रोक्तिगर्विता यथा ॥ पियमूरतिमेरीसदा राखतदृग
नबसाइ ॥ डरियतगोरीदेहयह मतिसाँरीह्वैजाइ ३२१
शुद्धप्रेमगर्विता ॥ मोचखपियपक्षीनहीं जोजलजलमेंजा
हिं ॥ मीनरूपजामेंपरे सदारहैंतिहिमाहिं ३२२ मोहिं
भूषणकीभूषणाहिब्रजभूषणकोप्यार ॥ मनसोंरहीशृंगा
रिकै तनसोंहीशृंगार ३२३ ॥ बक्रोक्तिरूपगर्विता ॥
यौवनलहियनरूपढिग अद्भुतगतियहकीन ॥ आप
जगतकोमारिकै हत्यामोहिंशिरदीन ३२४ ॥ शुद्धरूप
गर्विता ॥ जोदुखकमलनदुखतनहिं मेरेरूपसुजान ॥
तौमोआननजितकहो सरसिजमंत्रसमान ३२५ हौंन
सहौंगीबातआलि तोसोंकहतिनिशंक ॥ मेरेमुखकोचंद्र
कहिलावतलालकलंक ३२६ ॥ बक्रोक्तिगुणगर्विता ॥
मोपैगुणकछुवैनहीं ऐसोतैंहितपाइ ॥ अपनीबारीहूँपि
यहि मोघरजातिपठाइ ३२७ ॥ शुद्धगुणगर्विता ॥ तो
पठीनजोछीनकै सौतिनसोंरसलीन ॥ भीनतारकजो
बीनकै करोबांधिआधीन ३२८ कोचतुराईजोनहो
एककलामेंजीति ॥ आजुललामनकोकरौं हाथछला
कीरीति ३२९ ॥ मानिनीलक्षण ॥ पियतेकछुअपराध
किय तियउदासजोहोइ ॥ ताहिमानिनीकहतसबजे
पंडितकविलोइ ३३० तीनिभांतिपियसोंकरतिमा
नकोपपरकास ॥ मुखपरिकैपीछेकिधौंचुपक्वैरहैउदा
स ३३१ मुखपरकहैसोपंडितापीछेअन्यसँभोग ॥ औ
रतीसरीमानिनीयहहैमौनप्रयोग ३३२ ॥ मानिनी

यथा ॥ पियअपराधनजानियतकोजानौकिहिकाज ॥
बैठीभौंहचढ़ाइकैग्रीवनवायेआज ३३३ अथअष्टनायका
अवस्थाभेदतेकथन ॥ जिहिगुणपियआधीनसोस्वाधिन
पतिकानाम ॥ पियआवनदिनतबसजैबासकशय्यावा-
म ३३४ कौनैहेतुनआवईप्रीतमजाकेगेह ॥ ताको
शोचकरैहियेउत्कंठितासोयेह ३३५ करैचलनचरचा
चलैपहुँचैलोपियपास ॥ बोलपढ़ावैसिखसुनैअभिसारि
काप्रकास ३३६ सजिशृँगारजोजायातियललनमिलन
केहेत ॥ बिनुपियभेंटेरसिककहैविप्रलुब्धातिहिचेत ३३७
पररतिचिंततिपियचितैवलिपंडितारिसाइ ॥ कलहंत-
रिताकलहकरिफिरिपीछेपछिताइ ३३८ प्रोषितपति
काजाहिपियचल्योहोयपरदेश ॥ गमिष्यपतिजिहिदि-
नहिंमेंचलनचहैप्राणेश ३३९ गच्छतपतिकाजाहि
पियचलनसमैमेंहोइ ॥ पतिआगमनसँदेशलहिआग
मिष्यत्पतिजोइ ३४० आयमिलैजोबिदेशतेआगतपति
काजान ॥ बिछुरयोपियआयोसुन्योआगतपतिकामा-
न ३४१ हैअरुहोनोकैचुक्योविरहजोतनिप्रमान॥एकैक
रिसबकोगनैअष्टनायकाजान ३४२ उचितनइननारीन
मेंमुग्धाबरणनल्याइ ॥ पैबिश्रब्धनवोढ़गुनदीनोहैठह
राइ ३४३ सातोंपतिकादिकनमेंमुग्धाऊपुनिहोति ॥
पैबिनुचाहदुहूनकेरसकीहोतिनजोति ३४४ स्वाधीन
पतिकामेंमुग्धास्वाधीनपतिका॥ रूपनआयोसोकछूजोधनक
रिहोहाथ॥अबहीतेचाकरभयेकहांडोलियतनाथ ३४५
ज्योंज्योंलालनप्रेमबशसँगनतजतदिनराति ॥ त्योंत्यों

लाजसमुद्रमेंतियबूड़तिसीजाति ३४६ मध्यास्वाधीनपतिका ॥ पियपगधोवतिभावतीकौतुककरतिबनाइ ॥ खिनकभ्रुवावतिपाइखिनखेंचिलेतिसकुचाइ ३४७ ॥ प्रौढ़ास्वाधीनपतिका ॥ निरखिनिरखिप्रातियोसानिशिपियचखतियमुखओर ॥ कमलजानिअलिहोतहैंशशिअनुमानचकोर ३४८ निकसतहीपाछेपरत आवतआगेहोत ॥ रविग्रहसनमुखघामलौं तियतुवप्रकृतिउदोन ३४९ ज्योंज्योंपियचितचायसों देतमहावरधाइ ॥ त्योंत्योंपियअतिरीझकै नैननमेंमुसकाइ ३५० ॥ परकीयास्वाधीनपतिका ॥ योंहींलाजनखाइये फिरिफिरिमेरेसाथ ॥ परकीयाआवतिकहूँ घातपरेहीहाथ ३५१ मोमनपंथीप्रीतिगुण बांधिरह्योहैनाथ ॥ जोउदासह्वैउड़तहै तौफिरिल्यावतहाथ ३५२ ॥ सामान्यास्वाधीनपतिका ॥ कितीरूपअरुगुणभरीकलमोहीकोलाल ॥ कंकणदैकरगहतहौ हियलावतदैमाल ३५३ ॥ अथ मुग्धावासकसज्या ॥ इकभूषणसखिसजतिहै पियकोआगमजानि॥दूजेनवलास्वेदते निजतनराखतिआनि ३५४ सौतिहारतकिनवलातिय मिसगसकोठहराइ ॥ पियआवतगुणमुकतिकी गूँधतिमालबनाइ ३५५ ॥ मध्यावासकसज्या ॥ लालमिलनगुणितनसजति बालबदनकीजोति ॥ खिनककमलसीमलिनखिन अमलचंद्रसीहोति ३५६ ॥ प्रौढ़ावासकसज्या ॥ बदनजोतिभूषणपहिर चखचकचौंधतिबाल ॥ मोहिंशोचयहअंगतुव कैसेलखिहैंलाल ३५७ तियसुखसेजबिछाययों रहीबाट

पियहेरि॥ खेतबुवाईकृषणज्यों रहतमेघअवसेरि ३५८
परकीयावासकसज्जा ॥ दिनअन्हाइसाजैवसन गीतमि
लनसुखपाइ ॥ निशीद्यौसगिनिसंगही द्वारेपौढ़ीजा
इ ३५९ सामान्यावासकसज्जा ॥ नखशिखकरतशृंगार
तनधनीआइबोजानि ॥ अंगअंगसाजतिसिलहसुभ
टयुद्धअनुमानि ३६० अथमुग्धाउत्कंठिता ॥ खेलन
बैठीसखिनसंग नवलबधूचितलाइ ॥ पियबिनुआये
शोचमें खेलभूलिसोजाइ ३६१ लालनआयेबालसों
कह्योनलाजलगाइ ॥ खुल्योकुमुदसोंहियगयो मुंदिस
रोजकेभाइ ३६२ मध्याउत्कंठिता ॥ आवनकहिआयो
नपियगईयामयुगराति॥ शोचसंकोचनमेंपरीखरीबाल
बिललाति ३६३ पियआयेनहिंयहब्यथा रहीजुबाल
दुराइ ॥ मुंदेनेहकीबासलौंमुखपरप्रकटिलखाइ ३६४
प्रौढ़ाउत्कंठिता ॥ सखीकह्योजियजानिकै आजुनआयो
नाह॥ गृहमूखेखगलौंफिरे मोमनशोचनमाह ३६५
परकीयाउत्कंठिता ॥ बुलवाईआयेनपिययहैशोचजिय
ल्याइ॥ पिंजरपक्षीलौंतिया कुंजरलोंबिललाइ ३६६
सामान्याउत्कंठिता ॥ पियनहिंआयेअवधिबदिनैनरहे
मगजोइ ॥ औरनकेगृहजानकी दईशरमसबखो
इ ३६७ अथमुग्धाभिसारिका ॥ नैनचकोरनचन्द्रिका
प्यारोआजुनिशंक ॥ आसवासआवतनखतलीने
बीचसशङ्क ३६८ चलियेनवलाबदनते नामतिहारे
लाल॥ हांसीबातनमेंकढ़ीहाँसीनिकसीहाल ३६९॥ मध्या
भिसारिका ॥ दुहुँदिशिकचकुचभारतेभुकतिजातियों

बाल ॥ मानहुँआसवतेछकीचलीछकावनिलाल ३७० ॥
परकीयाभिसारिका ॥ योंऐंचतिपगमगधरतिउरभ्कैउरग
अधीर ॥ ज्योंमदमत्तमतंगछुटिखैंचेजातजँजीर ३७१ ॥
कृष्णाभिसारिका ॥ पियकेरंगभयेबिनामिलनहोतनहिंबा
म ॥ यातेतूरँगश्यामकैमिलनचलीहैश्याम ३७२ अंगछ
पावतिसुरतिसोंचलीजातियोंनारि ॥ खेलतिबिज्जुछटा
चितैढांपतिघटानिहारि ३७३ ॥ शुक्लाभिसारिका ॥
सजेश्वेतभूषणबसनजोन्हमाहिंनलखाइ ॥ पटउघरतघ
नबदनद्युतिचमकिहैजसीजाइ ३७४ श्वेतबसनयुतजो
न्हमेंयोंतियद्युतिदरशाइ ॥ मनोचलीक्षीरधिसुताक्षीर
सिंधुमेंजाइ ३७५ ॥ दिवाभिसारिका ॥ पहिरिदुपहरीअरु
णपटचलीशोचसाचिनाहिं ॥ नेकनजानीपरतितियफूले
किंशुकमाहिं ३७६ ॥ सामान्याभिसारिका ॥ चलीवारातिय
मीतपैजिहिधनहेतुलुभाइ ॥ सौतिनछबितेछकिरह्योअ-
भरनछैलपटाइ ३७७॥ अथमुग्धाविप्रलुब्धा ॥ सखिनसंगन
वलागईपियहियामिलननिकेत ॥ अरुणाकमलसोंमुखभ
योदिनहिमशङ्कसमेत ३७८॥ मध्याविप्रलुब्धा ॥ लख्योन
पियगतिभवनमेंतबसखिसोंसमुहाइ ॥ बैननमेंअनखा
इतियनैननरहीलजाइ ३७९ ॥ प्रौढ़ाबिप्रलुब्धा ॥ लखिसँ-
केतसूनोरहीयोंतियनारिनवाइ ॥ मनोबिनयशिवकीकरै
सबलकामकोपाइ ३८० ॥ परकीयाविप्रलुब्धा ॥ जोसँग
लैकुंजनगईबालमालतीफूल ॥ मधुपमिलेबिनुह्वैगयेसो
गुड़हरकेतूल ३८१ सामान्याविप्रलुब्धा ॥ निजघर
आयोरसिकसजिगईजिहिंधनीचाइ ॥ सोनामिल्योयोंहीं

गयोधनमेरेकरआइ ३८२॥ अथमुग्धाखंडिता ॥ सखिन सिखायेतियकह्योलखिजावकपियभाल॥ ताहीकेघरजा-इयेजिहिंपगलागेलाल ३८३ ॥ मध्याखंडिता ॥ पिय तननखलखिकरतजोतियबेदनअविदात॥ कछूखुलति कछुनहिंखुलतितुतरेकैसीबात३८४॥प्रौढ़ाखंडिता ॥लाल तिहारेभालकोजावकपावकनैन॥ जिनमेरेमनमैनकोजा रिदियोज्योंसैन ३८५॥ परकीयाखंडिता ॥ मीननहींयहपे खियतजिनजिनलागोदाग ॥ द्दगनरावरेकीललापल नलागीआग ३८६ तनअङ्कनअङ्कितनिरखि आलि ङ्गनपरतीक ॥ जोकछुकहियतठीककरि सोसबहोतअ लीक ३८७ ॥ सामान्याखण्डिता॥ जान्योबिनगुणमाल को मालठामलखिकन्त ॥ मोमनमाणिकलैदयो मन माणिकतुवअन्त ३८८॥ अथमुग्धाकलहांतरिता ॥ लाल विनयमानीनातिय अबमनमेंपछिताइ ॥ बिपुलमध्यको दुखतनिक मुखपैहोतलखाइ३८९॥ मध्याकलहांतरिता ॥ पियविनतीकरिफिरिगये सोकलेशसरसाइ ॥ तियमु खअम्बुजतेनिकसि मधुपरीतिदुरिजाइ ३९० ॥ प्रौढ़ा कलहांतरिता ॥जियनहिंआन्योपियवचन नाहकठान्यो रोष ॥ अमृततजिमेंबिषपियों देउँकौनकोदोष ३९१ तबनलखेपियबदनशशि कीन्ह्योकोटिप्रकार ॥ अब अलिनैनचकोरये लीलतबिरहअँगार ३९२ ॥ पर कीयाकलहांतरिता ॥ जाहिमातुहितपतितज्यो तज्योता हिजिहिहेत ॥ सोवहकोपहुतजिगयो करिहियबिपरि निकेत ३९३ अलीमानआहिकेडसे भाख्योहरिकरिने

ह ॥ तऊक्रोधविषनाछुट्यो अबछूटतहैंदेह ३९४ ॥
सामान्याकलहांतरिता ॥ जाकेमिलतमिटीसकल हुतीसा
धजोप्रान॥ ताकीबातसुनीनमैं नेहतूलदैकान ३९५ ॥
मुग्धाप्रोषित पतिका ॥ पियबिछुरनदुखनवलातिय मुख
सोंकहतलजाइ ॥ बदनमुंदेनलनीरके जलसमरुकेबना
इ ३९६ ॥ मध्याप्रोषितपतिका ॥ पियाबिनुतियदृगज
लनिकासि यौंपुतरीनबिलात ॥ ज्योंकमलनतेरसझरत
मधुकरपीवतजात ३९७ तियउसासपियबिरहते उस
सिअधरलौंआइ॥ कछुबाहरनिकसतकछुकभीतरकोफि
रिजाइ ३९८॥ प्रौढ़ाप्रोषित पतिका ॥ निशिजगाइप्रात
हिंचलत प्राणमजूरीहाल ॥ अंगनगरमेंबिरहयह भयो
नयोकोतवाल ३९९ निशिदिनबरषतरहतहूं तहंकहुंघ
टतनमूल॥ नैननीरहियअग्निको भयोघीवकेतूल४००॥
परकीया प्रोषितपतिका ॥ रक्तबूंदकाजरभरे यौंरोवति दु
रिबाल॥ मनोंनिशानीवादृगन दईगुंजकीमाल ४०१॥
सामान्या प्रोषितपतिका ॥ जोशृंगारतियकरतिनित नि
तधनकेशकुमार॥ धनीबिरहतेहोतसो अँगअँगमाहिंअँ
गार ४०२ बिथाधनीसोंकहनको निजगुणपथिकबुला
इ ॥ रोयजनावैनेहातिय नेहदृगनमेंलाइ ४०३ ॥ इति
अष्टनायका। अथ गमिष्यत् पतिका ॥ जाकोपियकछुदिननं
में चलनहारहोजाइ॥ बढ़तबिरहउरशोचअति जातब
दनकुम्हिलाइ ४०४ ॥ मुग्धागमिष्यत्पतिका ॥ जोनव
लामनमेंदयोनयोनेहतरुलाइ॥ बिरहातपरितबाततेजनु
डारयोकुंभिलाइ ४०५ रवनगवनसुनिकैश्रवन दृगदेखन

मिसठानि ॥ तियअंजनधोवनलगी अँशुवनकोजल आनि ४०६ ॥ मध्यागमिष्यत्पतिका ॥ कहनचहतपिय गवनसुनि कह्योनमुखतेजाइ ॥ लाजमदनकोभग रिबो नहिंहियहोतलखाइ ४०७॥ प्रौढ़ागमिष्यत्पतिका॥ कातिकपूनोअंतसुनि पूरबप्रियप्रस्थान॥ काननमुखश शिकोभयो अगहनगहनसमान ४०८ पहिलेपक्षमें आइहो पियअसाढ़केमांस ॥ प्रथमहिंझरिक्षितिबासु लो निकसतपैहोसांस ४०९ ॥ परकीयागमिष्यत्पतिका ॥ मिलनघरीज्योंज्योंप्रथम दुखदीनोंतुमश्याम ॥ त्योंचा हतहौअबलयो लैबिदेशकोनाम ४१० ॥ सामान्यागमि ष्यत्पतिका ॥ रच्योगवनतोकरिकृपा मोहिंदीजियोला ल ॥ जियराखनकोउरबसी नामजपनकोमाल ४११ अथगच्छत्पतिका जाकोपिय चलनसमयहोइ तामें मुग्धाग च्छत्पतिका॥ ज्योंज्योंलालनचलनकी प्रातघरीनियरा त॥ त्योंत्योंतियमुखचन्दकी ज्योतिघटतसीजात ४१२ मध्यागच्छत्पतिका ॥ पियकेचलतविदेशकछु कहिन हिंसकतिसंजोर॥ चरणअगूनासोरहै दाबिपिछोहाछो र ४१३ पियबिछुरनखिनयोंतिया चषअंशुवागरआ इ॥ मनुमधुकरमकरन्दको उगलिगयोफिरिखाइ ४१४ मध्यागच्छत्पतिका ॥ चेतनुजनुतेरोकहो कहाहायगो रंग॥ घरीएकमचलतहै जियतोपियकेसंग ४१५ गवन समयापियकेकहति योंनैननसोंसीय ॥ रोवनकेदिनबहु तहैं निरखिलेहुखिनपीय ४१६ ॥ परकीयागच्छत्पतिका ॥ करीदेहजोचीकनी हरिनितलाइसनेह॥ विरहअग्निज

रिखिनकमें होनिचहतअबखेह ४१७॥ सामान्याागच्छतु पतिका॥ पहिलेचितदैआपनो जोकीनोचितहाथ॥ तो हितुतोरिविदेशको कतचलियतअबनाथ ४१८॥ अथ आगमिष्यतुपतिका। जाकोपिय बिदेशते आवनहारहोइ तामें मुग्धा आगमिष्यतुपतिका॥ दिनद्वैमेंमिलिहैंइन्हें पियबिदेशसेआइ॥ सखियनसोंयहसुनातितिय अँखियनरही लजाइ ४१९॥ मध्या आगमिष्यतुपतिका॥ बामनैनफरकतभयो बामाआनंदआइ॥ खिनउघरतिखिनमुंदतिहै बादरधूपसुभाइ ४२०॥ प्रौढ़ाआगमिष्यतुपतिका॥ पातीआईअरुसुन्यो पियआगमनप्रकास॥ यातेकामिनिप्राणको उपज्योदुगुनहुलास ४२१ नैनबाहुकीफरकिलहिअरुबोलतसुनिकाग॥ अंगअंगतियकोलग्यो बरसनआनिसुहाग ४२२ हरिआगमसुनिपथिकमुख उमगेहरषसनेह॥ नखतेशिखलौंनारिकी भईचीकनीदेह ४२३॥ सामान्याआगमिष्यतुपतिका॥ आवतसुनिपरदेशते धनी मित्रतियआस॥ बारविलासिनिकेभयो बाराहिबारबिलास ४२४॥ आगच्छतुपतिकाजोतियविदेशतेआयोसुनेतामें॥ मुग्धाआगच्छतुपतिका॥ पियआयेयहसुनिभयो हरष बालतनआय॥ कमलकलीलौंअरुणता कछुमुखपैदरशाय४२५॥ मध्या आगच्छतुपतिका॥ लाजवतीपरदेशते पियआयोसुधिपाइ॥ निशिदिनमधुकेकमललौं बिकसतसकुचतजाइ ४२६॥ प्रौढ़ाआगच्छतुपतिका॥ पियआवतसुनिकैतिया बहुमनमेंपछिताइ॥ पंखनहींजोउड़िमिलौं सबसेपहिलेजाइ ४२७॥ परकीया आगच्छतुपति

का ॥ आवतसुनिघनश्यामको आनदेशतेबात ॥ चप
लाक्षैचमकनलग्यो नेहनहींकोगात ४२८ ॥ सामान्या
आगच्छतपतिका ॥ धनीमित्रआगमनसुनि सजिशृँगार
अभिराम ॥ बैठीबाहरनगरके डगरबांधिकैबाम ४२९
अथआगतपतिकाजाकोपियपरदेशतेआनिमिल्योतामेंमुग्धाआगत
पतिका॥ बिछुरिमिल्योपियबांहगहिज्योंज्योंबूझतजात॥
बूड़ीलाजसमुद्रतियमुखतेकढ़तनबात ४३० पियआये
आनंदजो भयोतियाउरआइ ॥ घटमधिदीपकज्योति
लोंकछुमुखतेदरशाइ ४३१ ॥ मध्याआगतपतिका ॥
आयोपियपरदेशते तियबैठीसकुचाइ ॥ तिरछीअँखि
यनहींकछुकलखतकनखियनचाइ ४३२ ॥ प्रौढ़ाआ
गतपतिका ॥पियलखियोंतियदृगनदैअंजनआँशूडारि॥
ज्योंशशिनिरखिचकोरवैबुझीचिनगिनीडारि४३३ तिय
हँसिबतियाकरतमेंअँशुवाढारतिजाइ ॥ मिलनबिरह
सुखदुखकहत भईफुलझरीभाइ ४३४ सखईबिछु
रनाशिशिरकीक्षैलहलहीतुरंत ॥ बेलिरूपप्रफुलितभई
लहिबसंतसोंकंत ४३५ ॥परकीयाआगतपतिका ॥ ग
येबीतदिनाबिरहके आयोनिशिआनंद ॥ प्रेमफँदी
कुमुदिनिभई निरखतहीब्रजचंद ४३६ ॥ सामान्या
आगतपतिका ॥ तुवबिछुरततननगरमें बिरहलुटेरे
आइ ॥ मेरेसुबरणरूपको लीनोलूटिबनाइ ४३७
आगतपतिकामें संयोगगर्विता लक्षण ॥ पियआयोपरदेश
ते गर्बकरैजोबाल॥ सोसंयोगनिगर्विता बरणतबुद्धिबि
शाल ४३८॥ यथा॥ कहांगयेवेजलदजे नितउठिजारत

जाइ ॥ गाइमलारबुलाइये तऊनपरतलखाइ ४३९
॥ अथ उत्तमा मध्यमा अधमा क्रमते कथनम् ॥ होइनहींकेंके
मिटै नाहकहूंजगमान ॥ कहोउत्तमामध्यमा असपरकृ
तपरमान ४४० केहूअवगुणकंतके लखैंनहितकेजोर ॥
पियमयंकमुखकेभये रमणीनैनचकोर ४४१ यदपि
मधुपरसलेतहैं सबफूलनमेंजाय ॥ तदपिमालतीकेहिये
अवगुणनहिंठहराय४४२ मध्यायथा ॥ पियसन्मुखसन्मु
खरहित विमुखविमुखह्वैजाति ॥ धनदरपणप्रतिबिम्ब
लौं तेरीगतिदरशाति ४४३ बिनुसनेहरूखेपरत लहि
सनेहचिकनाइ ॥ बिषसुभावयेकचनके तिनमेंतुवदरशा
इ ४४४ ॥ अधमा यथा ॥ ज्योंज्योंआदरसोंललन पानि
पदेतबनाइ ॥ त्योंत्योंभामिनिनैनवो खिनखिनऐंठति
जाइ ४४५ विनहीअवगुणपगनपरि यदपिमनावांहिंला
ल ॥ तदपिमानहूंपैसदा रहैअनमनीबाल ४४६ ॥ अथ
चारिभेद नायकाजाति विधिते कथन तत्र पद्मिनीलक्षण ॥ तन
अमोलकुन्दनवरण समसुरीधसुकुमार ॥ सूक्षमभोजन
रोषरति सोपदमिनिनिरधार ४४७॥ यथा ॥ तनसुवास
दृगसलजशुभ मनशुचिकरमसुनीत ॥ इनसुवरणवरणी
लई जगतनिकाईजीति ४४८ सोनोऔरसुगन्धहै बाल
सलोनोगात ॥ जापैपियचखभंवरलौं सदारहतमड़रा
त ४४९ अथचित्रिणीलक्षण॥ जिहिमृगनैनीकोरहै नृत्य
गीतमेंध्यान ॥ चोपसदापियचित्रसों वहचित्रिणीसुजा
न ४५०॥ चित्रिणीयथा ॥ तियनिजपियकोचित्रमें सोंतु
कदरशनपाइ ॥ गाइगाइनृत्यातिरहाति भांतिभांतिकेभा

इ ४५१ मित्रनाहिंचितवतकहीं चित्ररहीचितलाइ ॥
पत्रीहेरतिहैकोऊ पत्रीसन्मुखपाइ ४५२ ॥ शंखिनीलक्ष
ण ॥ देहछीनमोटीनसैं कुचलघुनिलजनिशंक ॥ कोपव
तीनखदन्तरुचि शंखिनिपीकेअंक ४५३ ॥ यथा ॥
सनखाहियोलखिलालको यहमनहोतसँदेह ॥ नख
नखोदिचाहतिकियो लालनकेहियगेह ४५४ ॥
हस्तिनीलक्षण ॥ थूलअंगलोमनछयो गोरीभूरेकेस ॥
गजगौनीदुररीधनी भनिहसितनियहभेद ४५५ ॥
यथा ॥ रंगनीमोटीगोरटी यौवनमदऐंडाति॥ सखि
नसंगगजगामिनी चलीठानसोंजाति ४५६ ॥ अथ
त्रिबिधनखमकालोकभेदतेकवर्णनं ॥ इंद्रानीदिब्याकहै नर
तियकहैअदिब्य ॥ सियलौंजोतियअवतरै सोकहि
दिब्यादिब्य ४५७ ॥ नेमबर्णनम् ॥ कामवतीअनुरा
गिनीप्रौढ़ाभेदप्रमान ॥ ज्येष्ठकनिष्ठाहूबिषे मानवती
जियजान ४५८ तियअभिलाषदशामइं लालसमती
कहाइ ॥ ताहिसोमतीकहतहैं चुंबनआदिथिनाइ ४५९
स्वकियनमेंधीरादिको बरणगयेप्राचीन ॥ मानहेतुल
बतियनरहि रावतबरबरबीन ४६० कुलटाछुटजोभेद
सो परतियकेसबआइ ॥ स्वकियाहूमेंकैसकत त्रपाहास
कोपाइ ४६१ त्योंहींपरकीयानमें हैमुग्धादिककर्म ॥
ज्योंविद्यावांचतसबै हैब्राह्मणकोधर्म ४६२ लोकभेद
दिब्यादिहै यहजियमेंअचिरेख ॥ इतनीबिधिसबनायका
बरणतबुद्धिबिशेख ४६३ ॥ नायकाभेदमध्याबिबेककथन ॥
स्वकियादिकहूभेदको कर्मभेदजियजानि ॥ मुग्धादिक

कोचितबिषे भेदबहिक्रममानि ४६४ अन्यसुरतिदुख
दादिको अष्टनायकासंग ॥ गनतअवस्थाभेदमें जिन
कीबुद्धिउतंग ४६५ उत्तमादिकोबूझिये प्रकृतभेदहिय
माहिं॥ पद्मिनिआदिकबित्तमें जातिभेदठहराहिं ४६६
नायकाकीगणना ॥ इकस्वकियाद्वैपरकिया सामान्याभि-
लिचारि ॥ अष्टनायकामिलिसोई बत्तिसहोतबिचारि
४६७ उत्तमादिसोंमिलिवहै सुनछियानबेहोत ॥ पुनि
चौरासीतीनसै पद्मिनिआदिउदोत ४६८ रचेसैबावन
बहुरिदिब्यादिकरेसंग ॥ योंगणनामेंनायकाबरणीबुद्धि
उतंग ४६९ अथतेरहबिधिस्वकीयाभरतमतेकथनं ॥ सात
बरषलौंजानिये देवीबिधिपरमान ॥ बहुरोदेवीरीधरचि
चौदहलोधहजान ४७० तेहिपीछेइकीसलों सुधीगंध्र
बीहोय॥पुनिगंध्रविमिलिमानुषीअट्ठाइसलौंजोइ ४७१
शुद्धिमानुषीकोबहुरि पैंतिसलौंउरधारि ॥ सातबर्षप्रति
प्रतिलहति पांचनामयेनारि ४७२ पुनिइनपांचो भेदमें
तीनिभेदयोंजान॥ साढ़ेदशलौंरहतिहै गौरीवैसप्रमान
४७३ पुनिपौनेदशलौंरहै ओहीगौरीलेश ॥ सवाबार
हीबर्षपरपुनिलक्षिमीसुदेश ४७४ साढ़ेचौबिसलौंरहै
वैसलक्षिमीआन ॥ तेहिऊपरपैंतीसलों वैससरस्वति
जान ४७५ पैंतिसऊपरनारिके औरवैसकोलाइ॥ नहिं
वरणतरसग्रंथमें यहकबिकहतबनाइ ४७६ गौरीपूजन
योगहैलक्ष्मीभोगसमर्थ॥ बहुरिसरस्वतिजानिये मतोबू
झिवेअर्थ४७७ताहिलक्षमीवैसमें स्वाकियातेरहजानि॥
तामेंमुग्धापांचविधिभरतमतेपहिंचानि४७८पुनिमध्या

हैचारिविधि प्रौढ़ाहूपुनिचारि ॥ सोइनतेरहभेदमें मुग्धा
येउरधारि ४७९ प्रथमअंकुरितयौवना तीनिमासलौंहो
इ ॥ नवलबधूषटमासलौं यहनिश्चयजियजोइ ४८०
बहुरिचौदहेंबरषपुनि नवयौवनानिवास ॥ नवलअनं
गापंद्रहें बरषकरतपरकास ४८१ होयसोरहेंबर्षपर पुनि
सलज्जरतनारि ॥ अबमध्याकोबरणिपुनि प्रौढ़ाकहौं
बिचारि ४८२ होतबर्षउनईसपै प्रगलभवचनाआनि ॥
बहुरिबीसयेंबर्षमें सुरतिबिचित्रामानि ४८३ प्रौढ़ाल
बधापतिबहुरि इकइसमेंसोहोति ॥ बाइसवेंरतिकोबिदा
जानतहैंकबिगोति ४८४ तेइसयेंवासिवल्लभा नाभधर
तबुधिवंत॥साढ़ेचौबिसलौंबहुरिरहैशुभरमाअंत४८५॥
अथद्वितीयभेदवैसकोक्रमतेकथनम्॥ सातबर्षलौंजानियेकन्या
कोपरमान ॥ तेरहलौंगौरीबहुरिबालावैसनिदान ४८६
तरुणीकहैंतेईसलौं प्रौढ़ापुनिचालीस ॥ इहिबिधितिय
वैकोकसाति बरणबईकविईस ४८७ ॥ इतिनायकाभेद ॥
अथनायककथनम् ॥ कहीनायकाकहतहौं अबनायकरस
बीन ॥ आलम्बनमेंदूसरो जिहिबरणतपरबीन ४८८॥
अथनायकलक्षण ॥ उपजैजिहिनरनिरखिकै नारिनहींप्र
तिभाव॥ ताहीकोनायककहैं जेप्रबीणकविराव ४८९॥
नायकगुणकथनम् ॥ धरेरूपगुणधनमनी सबलअमलरस
पानि ॥ दानीधीररुभीरते नायकसागरजानि४९०इंद्र
रूपगुणज्ञानते वितपशुसागरदान॥ कामकलाधरिअव
तरे सोतुवहोयसमान ४९१ ॥ अथत्रिविधनायककथनम्॥
सुकियापरकीयाप्रतिहि पतिउपपतिहैनाम ॥ सामान्या

मित्रहिकहैं वैसिककविअभिराम ४९२॥ पतिकोउदाहरण॥
जिनचाहीकुलकानितिन धरीकानयहल्याइ ॥ पतिनी
कीनहिंपाइये बिनुपतिनीकेपाइ ४९३ जबतेलालनर
मनको गमनलेआयेसंग ॥ तबतेशिवलौंआपनो करि
राखीअरधंग ४९४ ॥ पतिकेभेदचारिकथनं ॥ इकतियर
तिअनुकूलहै दक्षनशीलसमान ॥ शठकपटीमिठबोल
नो शिष्टजोदीठनिदान ४९५ ॥ अनुकूलयथा ॥ नयेब
सनजबहौंसजों तबपियभरमिलिजाहिं ॥ बिनुपरुषेधु
निबचनके हेरिसकतिहैनाहिं ४९६ पातनलैपगलैधर
त करतशीशपटछाहिं ॥ यहिविधिपियप्यारीलिये पहि
रतउपवनमाहिं ४९७ ॥ दक्षयथा ॥ सागरदक्षनदुहुन
की समबरणतहैंप्रीति ॥ छहनविपिनयहतियनसों मिल
तएकहीरीति ४९८ सजिशिंगारआईतियातनुपियदीप
दुराइ ॥ बोल्योहंसिहंसिनिजकरन ल्यावैदियाजरा
इ ४९९ योंवनितनिपियबातसों अतिअनन्दसरसा
त ॥ ज्योंबोलनिसुखहोतहै सुनिबसंतकीबात ५०० चं
हुंदिशिफेरतहैवदन योंरचिरामअनूप ॥ मानोतियकेहे
तपिय धस्योचतुर्मुखरूप ५०१ ॥ शठयथा ॥ हेरिहेरिमु
खफेरिकत तानतमोहानिदान ॥ बाणनबुधिकोऊनहीं रा
खीचढ़ीकमान ५०२ रहलरूठिकैबालसों दृगदुखदेत
बनाइ ॥ ढूंढ़िरहेहूबालकहं नैननअधिकसोहाइ ५०३
॥ शिष्टयथा ॥ कालगयोहीआपही सौरिरसौंहैंखाइ ॥ आ
जशीशजावकलिये फिरिलोटतिहैपाइ ५०४ पियसोंति
नकेनेहमें घनेसनेहैंनैन ॥ यातेपानिपलाजको केहूबि

धिठहरैन ५०५ ॥ अनुकूलादिकमैं। उपपतिवैसिकहूतेहैं स
कत यह कथनम् ॥ अनुकूलादिकयेचतुर भेदजोसोइठह
राइ ५०६ ॥ उपपतिको उदाहरण ॥ सुखबाधनकोमिलन
को किहिविधिबरणैकोइ ॥ चोरीकोगुरुविदितयह निपट
स्वादकोहोइ ५०७ बंशीटेरीआइहरि तियदेखनिकेचा
इ ॥ खिरकीखोलतहीगिरे कछुफिरिकीसीखाइ ५०८ य
हचरित्रतियककिथा कहियेकाहिसुनाइ ॥ मोघटआग
लगायकै घटलैजलकोजाइ ५०९ आईवहपानिपभरी
रमनीआजुअन्हान ॥ जिहिबूड़निनिकसनिलखै निकस
तबूड़तप्रान ॥ ५१० उपपति त्रिबिधिभेद ॥ उपपतिती
नप्रकारपुनि गूढ़मूढ़आरूढ़ ॥ तिनकोयहबिधिआनिकै
बरणतहैंमतिमूढ़ ५११ ॥ गूढ़लक्षण ॥ परतियसोंमिलिने
हजो दुरयेरहैबनाइ ॥ दिनदिनकरहिविनोदअति सोई
गूढ़कहिजाइ ५१२ ॥ यथा ॥ पियनिजतियहियबसतयों
दुरयेपरतियनेह ॥ मधुपमालतीछिकतिज्यों करतिकमल
मेंगेह ५१३ ॥ मूढ़लक्षण ॥ परनारीकेनेहको कहिनिजध
नकेपास ॥ फिरिधनकेरूसेभगे हियमेंमूढ़उसास ५१४
यथा ॥ परतियहितनिजनारिसों योंकहिपियपछिताइ ॥
कुमतिचोरज्योंआपनी चोरीआपबताइ ५१५ ॥ आरूढ़
लक्षण ॥ सदापरायेगेहजो परतरुणीहितजाइ ॥ नितब
न्धनतातृणसहै यहआरूढ़सुभाइ ५१६ ॥ यथा ॥ कुलट
नकेसँगपकरिकै मारोबांधिअभीत ॥ कोउछूटेपरकहत
हैं भईहमारीजीत ५१७ ॥ वैसिकको उदाहरण ॥ सुबरण
बरणीद्वारपै बैठीपानचबात ॥ ऐंठीसीचाखियनचितै जि

यमेंपैठीजात ५१८ लालअधरहियरँगरदन जिहिसुब
रणतनसाथ ॥ दीजैक्योंहीलायकै कीजैतिहिधरसाथ
५१९ कौनयतनकरिराखिये,ताकोनितहितलाइ।अष्ट
पदनसोंलेतकर जाकेवियपदजाइ ५२० ॥ वैसिकभेद ॥
वैसिकहैपुनिउभयविधिप्रथमजानअनुरत्त ॥ ताहीकोपु
निजानियेभेददूसरोमत्त५२१।अनुरक्तलक्षण॥होइजोमन
बचकरमसोंगाणिकाहीसोंलीन॥ताहीसोंअनुरक्तकहिभा
षतहैंपरबीन५२२॥ यथा ॥ यामनमेंअबकौनविधिदूजी
आनिसमाइ ॥ बारबिलासानिकेरह्यो सदाबिलासनिछा
इ ५२३ ॥ मत्तलक्षणं ॥ दूजोवैसिकमत्तहै यहबरणतसु
धितत्त ॥ सोईतीनविधिकाममत सुरामत्तधनमत्त ५२४
काममत्त यथा ॥ फिरतरहतनितकामबश कहूंननैनअ
घात ॥ दिननिजघरनिशिपरघरहि बारिनारिघरिप्रा
त ५२५ ॥ सुरामत्त यथा ॥ चंपकबरणसुबासतनि निजध
नकीनसुहाइ ॥ बारबधुनकेनितफिरै मदपीवनकेचा
इ ५२६ ॥ धनमत्तयथा ॥ रूपगुणनमेंआगरी नगरनाग
रील्याइ ॥ बशकेवलइनछुद्रयह बशाकरिलईबनाइ ५२७
नायक उत्तमादि त्रिविध भेद प्रकृतिगुणते कथन ॥ पतिउ
पपतिवैसिकतिहू उत्तमादिजियजानि ॥ ग्रंथनकोमतदे
खिकै बरणतहैंकबिआनि ५२८ ॥ उत्तमादिलक्षण ॥ उत्त
ममनुहारिनकरै माननमानैआनि ॥ मध्यमसमईअधम
निज अरथीनिलजानिदान ५२९ ॥ उत्तमनायक यथा ॥ का
जरदीन्हेअरुणता भईबालदगमाहिं ॥ समुझिललाई
मानकी बिनैकरतहैनाहिं ५३० तियसखियनसोंरिस

किये बैठीभौंहानितानि ।पीयसकतनहिंकहिसकत याते मुखतेआनि ५३१ ॥ मध्यमनायकयथा ॥ आवतहीतिय मानताकि कछूनबोलेलाल ॥ जबशिंगारसाजनलगी तब तेलालनिहाल ५३२ बिनुपानिपआदरनहीं रहैराखम नमाहिं ॥ सुमुखिरूपपानिपलिये मिलतिनारिसोना हिं५३३ ॥ अधमनायकयथा ॥ दईलाजबिसराइजिनलई कूरतासाथ ॥ दईदयोहैबांधिकै ताहिनिरदयाहाथ५३४ निलजनिठुरनिजआरथी जिहिनहिताहितचेत॥ ऐसे लंगरसोंसखी बनैकौनविधिहेत५३५॥ मानीनायकचतुर नायकवर्णन ॥ मानीनायकचतुरको सबमेंअन्तरभाव ॥ तिनदुहूनकेकलककवि द्वैविधिकहतसुभाव ५३६ ॥ मानीयथा ॥ जिहिहितविनैअकोरदै करतहुतेकरजोरि ॥ तासोंलालकठोरह्वै कहारह्योमुखमोरि ५३७ ॥ मानी नायकभेद ॥ मानीकेद्वैभेदये द्वैविधिलजिंजानि ॥ प्रथ मरूपमानीवरण गुणमानीपुनिआनि ५३८ ॥ रूपमा नीयथा ॥ खरीअँगाररहीसबै लखीनतुमइकबारि ॥ यहकारीअनुबारिमें इतौनानिबिस्तारि ४३९ बारबा रहेरतकहा दरपणमेंचितलाइ ॥ नेकलखोनिजबदन में राधेबदनमिलाइ ५४० ॥ गुणमानीयथा ॥ अहोनि ठुरनिशिकितबसे इतीबातसुनिकान ॥ कछुयकनिशि करिआपुहरि कख्योबामसोंमान ५४१ ॥ चतुरनायक लक्षण ॥ निपुणहोयजोसकलविधि सोईचतुरबखान ॥ वचनचतुरहैएकअरु क्रियाचतुरपुनिजान ५४२ ॥ वचनचतुर यथा ॥ मिसकरिसबलसोंयोंकह्यो हरिराधिके

सुनाइ ॥ लैहौंपाहनसङ्गही तौतुवगाइसिलाइ ५४३
कैसीविधिचमकतहुती अम्बरमयअभिराम ॥ लखी
श्यामकोउकामिनी नहींदामिनीबाम ५४४ ॥ नायकस्व
यंदूत ॥ चलीकहाकीजैकृपा सघनकुंजकीछाहँ ॥ भुव
अकाशदोऊजरत जेठदुपहरीमाहँ ५४५ यहिअँधि-
यारीमोंप्रिया मिलिचलियेकिनआइ ॥ हमसहाइतुम
होइतुममुखद्युतिहमहिंसहाइ ५४६ ॥ क्रियाचतुरयथा ॥
विप्ररूपधरिसोंजुलै यमुनाकेतटजाइ ॥ हरिटीकोराधे
बदन दयोसबनवहिकाइ ५४७ आजुलेरुवादेनमिस
मोउठढिगकरिल्याइ ॥ उनचंचलयहअनछुई छतियां
छुईबनाइ ५४८ ॥ प्रोषितनायक लक्षण ॥ जोतियनरन
जुदेशतजि आनदेशकोजाइ ॥ तासोंप्रोषितकहतहैं
जेप्रबीणकबिराइ ५४९ ॥ यथा ॥ कनकछरीशोभाभ
री दामिनिदीपतिजाल ॥ अमृतबोलिजिवावनी मो
तियविछुरीहाल ५५० जबतेतियतजिहौंपस्यो यहिवि
देशमेंआइ ॥ तबतेइनबतियानसों जोजैहियदगलाइ
५५१ अग्निरूपबनिरहतकत जारतहैकतमोहिं ॥ ति
यतनपानिपपाइकै बोरिमारिहौंतोहिं ५५२ ॥ अनभिज्ञ
नायक लक्षण ॥ जोसंज्ञासङ्केतको नेकनराखैज्ञान ॥ सो
नायकअनभिज्ञहै यहवरणतकविजान ५५३ ॥ यथा ॥
हँसहँसायअरसायपुनि दुगुनचायकरिढैन ॥ ज्योदी
कामिनिसैनपै लखिमूरखक्षणसैन ५५४ ॥ रसप्रधानतें
चतुर्विधिनायककथनं ॥ रसप्रधानतेनामये नायकपावैचा
रि ॥ जोरसजामेंअधिकहै तामेंतहांबिचारि ५५५ हो